भूपसुमंत्रु लीन्ह उरलाई। बूड़त कछु अधार जनु पाई
सहित सनेह निकट बैठारी। पूंछत राउ नयन भरि बारी
रामकुसल कहु सषा सनेही। कहं रघुनाथ लषनु बैदेही
आने फेरि कि बनहिं सिधाए। सुनतसचिव लोचनजलछाए
सोक बिकल पुनि पूंछ नरेसू। कहु सिय राम लषन संदेसू
राम रूप गुन सील सुभाऊ। सुमिरिसुमिरिउरसोचतराऊ
राउ सुनाय दीन्ह बनबासू। सुनिमन भएउ न हरषहरांसू
सोसुत बिछुरत गए न प्राना। को पापी बड मोहिसमाना

दोहा॥ सषा रामु सिय लषनु जहं तहां मोहि पहुंचाउ।
नाहित चाहतचलन अब प्रान कहौं सतिभाउ॥४९॥

पुनिपुनिपूंछत मंत्रिहिराऊ। प्रियतम सुअन संदेससुनाऊ
कराहि सषा सोइ बेगिउपाऊ। रामुलषन सियनयनदेपाऊ
सचिउ धीर धरि कह मृदुबानी। महाराज तुम्ह पंडितग्यानी
बीर सुधीर धुरंधर देवा। साधुसमाजसदा तुम्ह सेवा
जनममरनसबदुखसुखभोगा। हानिलाभुप्रियमिलनबियोगा
कालकरमबस होंहिगोसांई। बरबस राति दिवसकिनांई
सुष हरषहिं जड दुषबिलषाहीं। दोउसमधीरधरहिमनमाहीं
धीरज धरहु बिबेकुबिचारी। छाडिअसोचसकलहितकारी

दोहा॥प्रथम बासु तमसा भएउ दूसरि सुरसरि तीर।
न्हाइ रहे जलपानु करि सियसमेत दोउ बीर॥५०॥

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई। सोजामिनि सिंगरौर गंवाई
होत प्रात बटछीरु मगावा। जटामुकुट निज सीस बनावा
रामसषा तब नाव मगाई। प्रिया चढाइ चढे रघुराई
लषन बानधनु धरे बनाई। आपु चढे प्रभुआयेसु पाई

बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा। बोले मधुरबचन धरिधीरा
तात प्रनामु तातसन कहेहू। बार बार पदपंकज गहेहू
करबि पाय परि बिनय बहोरी। तातकरिअजानिचिंताओरी
बनमग मंगल कुसल हमारें। कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारे

छंदु॥ तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुषु पाइहौं।
प्रतिपालि आयसुकुसल देषनपायपुनि फिरिआइहौं॥
जननी सकलपरितोषि परिपरि पायं करिबिनतीघनी।
तुलसीकरेहुसोइजतनुजेंहि कुसलीरहहिंकोसलधनी॥

सोरठा॥ गुरसन कहब संदेसु बार बार पदपदुम गहि।
करबसोइउपदेसु जेंहिनसोचमोहिअवधपति॥९१॥

पुरजनपरिजन सकल निहोरी। तात सुनायेहु बिनती मोरी
सोइ सब भांतिमोर हितकारी। जातें रह नरनाहुं सुषारी
कहब संदेसु भरत के आए। नीति न तजिअराजपदुपाए
पालेहु प्रजहिकरम मन बानी। सेएहुमातु सकलसमजानी
और निबाहेहु भायप भाई। करि पितुमातुसुजनसेवकाई
तात भांति तेहि राषब राऊ। सोचमोरजेंहिकरइ न काऊ
लषन कहे कछु बचन कठोरा। बरजिराम पुनि मोहिनिहोरा
बारबार निज सपथ देवाई। कहबि न तात लषनलरिकाई

दोहा॥ कहिप्रनामु कछु कहनलिय सियभइ सिथिलसनेह।
थकितबचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह॥९२॥

तेहि अवसर रघुबर रुषपाई। केवट पारहि नाव चलाई
रघुकुलतिलक चले एहि भांती। देखेउंठाढ कुलिसधरिछाती
मैं आपन किमि कहउं कलेसू। जिअत फिरउं लेइरामसंदेसू
असकहिसचिवबचनरहिगयऊ। हानिगलानिसोचबसभयऊ

सूतबचन सुनतहि नरनाहू । परेउ धरनि उर दारुनदाहू
तलफत बिषम मोह मनमापा। मांजामनहुं मीनकहुं ब्यापा
करिबिलाप सबरोवहिंरानी । महाबिपतिकिमिजाइबखानी
सुनिबिलाप दुषहू दुषलागा । धीरजहू कर धीरजु भागा
दोहा ॥ भयेउ कोलाहलु अवधअति सुनि नृपराउर सोरु।
बिपुल बिहंगबन परेउ निसि मानहुंकुलिसकठोरु॥१३॥
प्रान कंठगत भयेउ भुआलू।मनिबिहीन जनु ब्याकुलब्यालू
इंद्री सकल बिकलभइं भारी। जनुसर सरसिजबनुबिनुबारी
कौसल्यां नृपु दीष मलाना ।रबिकुलरबिअंथएउजिअंजाना
उर धरि धीर राममहतारी। बोली बचन समय अनुसारी
नाथसमुझिमनकरिअबिचारू। राम बियोग पयोधिअपारू
करनधार तुम्ह अवधजहाजू।चढेउसकलप्रियपाथिकसमाजू
धीरजु धरिअ त पाइअपारू । नाहि त बूडिहिसबुपरिवारू
जौंजियधरिअबिनयापियमोरी।रामुलषनुसियमिलहिंबहोरी
दोहा॥प्रियाबचन मृदु सुनत नृप चितएउ आंषि उघारि ।
तलफत मीन मलीन जनु सींचत सीतलबारि॥१४॥
धरि धीरजु उठि बैठि भुआलू । कहु सुमंत्र कहं राम कृपालू
कहां लषनु कहं रामुसनेही । कहं प्रियपुत्रबधू बैदेही
बिलपतराउबिकलबहुभांती।भइजुगसरिससिरातिनराती
तापस अंधसाप सुधिआई । कौसल्यहि सबकथा सुनाई
भएउ बिकलबरनतइतिहासा। रामरहितधिगजीवनआसा
सोतनु राषिकरबिमैं काहा । जेंहिनप्रेमपनु मोर निबाहा
हा रघुनंदन प्रानपिरीते । तुम्ह बिनु जिअतबहुतादिन बीते
हा जानकी लषन हा रघुबर। हापितुहितचितचातकजलधर

दोहा ॥ रामराम कहि रामकहि राम राम कहि राम ।
तनुपरिहरिरघुबरबिरहराउ गयेउ सुरधाम ॥९९॥

जिअनमरनफलुदशरथपावा । अंडअनेकअमलजसु छावा
जिअतरामबिधुबदनु निहारा । रामबिरहकरिमरनु संवारा
सोकाबिकल सब रोवहिंरानी । रूपुसीलु बलु तेजु बषानी
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमितल बारहिं बारा
बिलपहिंबिकलदासअरुदासीं । घर घर रुदनु करहिंपुरबासीं
अथएउ आजु भानु कुलभानू । धरमअवधि गुन रूप निधानू
गारी सकल कैकइहि देहीं । नयन बिहीन कीन्हजगजेहीं
एहिबिधिबिलपतरैनिबिहानी । आएसकल महामुनिग्यानी

दोहा ॥ तब बसिष्ठ मुनि समयसम कहि अनेकइतिहास ।
सोक नेवारेउ सबहि कर निज बिग्यानप्रकास ॥८६॥

तेलनावभरिनृपतनु राषा । दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू । नृप सुधि कतहुंकहहुजानिकाहू
एतनेइ कहेउ भरतसन जाई । गुर बोलाइ पठयेउदोउ भाई
सुनि मुनिआयेसु धावनधाए । चले बेगि बरबाजि लजाए
अनरथु अवध अरंभेउजबतें । कुसगुन होंहि भरत कहुं तबतें
देषहिं राति भयानकसपना । जागिकरहिंकटुकोटिकलपना
बिप्र जेंवाइदेहिंदिन दाना । सिवअभिषककरहिंबिधिनाना
मागहिं हृदय महेस मनाई । कुसलमातुपितुपरिजन भाई

दोहा ॥ एहिबिधिसोचत भरत मन धावन पहुंचे आइ ।
गुरअनुसासन श्रवन सुनिचले गनेसु मनाइ ॥१९७॥

चले समीरबेग हय हांके । नाघत सरितसैल बन बांके
हृदउसोचुबडकछु न सोहाई । असजानहिंजिअंजाउं उडाई

एक निमेष बरषसम जाई । एहिबिधिभरतनगरनिअराई
असगुन हौंहि नगर पैठारा ।रटहिं कुभांति कुषेत करारा
षर सिआर बोलहिंप्रातिकूला ।सुनिसुनि होइभरतमनसूला
श्रीहत सर सरिता बनबागा । नगरु बिसेषि भयावनुलागा
षगमृग हयगय जाहिंनजोएं । रामबियोग कुरोग बिगोएं
नगर नारिनर निपट दुषारी । मनहुंसबन्हि सब संपतिहारी

दोहा॥पुरजनमिलहिंनकहहिं कछु गंवहिं जोहारहिंजांहिं ।
भरत कुसल पूंछिन सकहिं भयबिषादुमनमांहिं॥१९८॥

हाट बाट नहि जाइ निहारी ।जनुपुरदहंदिसि लागिदवारी
आवतसुतसुनि कैकयनंदिनि । हरषीरबिकुलजलरुहचंदिनि
सजि आरती मुदितउठिधाई ।द्वारेंहि भेंटि भवनलेइ आई
भरत दुषित पारिवारु निहारा।मानहुं तुहिन बनजबनु मारा
कैकेई हराषित एहि भांती । मनहुं मुदितदवलाइकिराती
सुतहि ससोच देषि मनु मारें । पूंछति नैहर कुसल हमारें
सकलकुसलकहि भरतसुनाई। पूंछी निजकुलकुसल भलाई
कहु कहं तात कहां सबमाता।कहं सिय रामुलषनप्रियभ्राता

दोहा॥सुनि सुतबचन सनेहमय कपटनीर भरि नयन ।
भरत श्रवन मन सूल सम पापिनि बोलीबयन॥९९॥

तात बात मैं सकल संवारी । भै मंथरा सहाय बिचारी
कछुककाज बिधिबीच बिगारेउ।भूपति सुरपातिपुरपगु धारेउ
सुनत भरतु भएबिबस बिषादा।जनुसहमेउकारिकेहरिनादा
तात तात हा तात पुकारी ।परे भूमितल व्याकुल भारी
चलत न देषन पायउं तोही ।तात न रामहिसौंपेहुमोही
बहुरि धीर धरि उठे संभारी । कहु पितुमरन हेतु महतारी

सुनि सुतबचन कहति कैकेई । मरमु पांछि जनु माहुरदेई
आदिहुं तें सबु आपनि करनी ।कुटिलकठोरमुदितमनबरनी
दोहा॥भरतंहि बिसरेउ पितुमरन सुनत राम बन गौनु ।
हेंतु अपनपउ जानि जिअं थकित रहे धरि मौनु॥१०॥
बिकलबिलोकिसुताहिसमुझावतिमनहुंजरेपरलोनुलगावति
तात राउ नहि सोचइ जोगू ।बिढइसुकृतजसुकीन्हेउभोगू
जीवत सकल जनम फल पाए ।अंतअमरपति सदनासिधाए
अस अनुमानि सोचु परिहरहू। सहित समाज राजपुरकरहू
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू। पाकें छत जनु लाग अंगारू
धीरजु धरि भरिलेहिंउसासा।पापिनिसबहि भांतिकुलनासा
जौं पै कुरुचि रही अति तोही ।जनमत काहे न मारे मोही
पेड काटि तैं पालउसींचा।मीनाजिअन निति बारिउलीचा
दोहा॥हंसबंसु दसरथु जनकु राम लषन से भाइ ।
जननी तूं जननी भई बिधि सन कछु न बसाइ॥६१॥
जबतैंकुमतिकुमतजिअं ठयेऊ ।षंड षंड होइहृदउन गयेऊ
बर मांगत मन भइ नहि पीरा । गरिनजीहमुहपरेउनकीरा
भूपेप्रतीतितोरिकिमिकीन्ही।मरनकालबिधिमतिहरिलीन्ही
बिधिहुंननारिहृदयगतिजानी। सकलकपटअघअवगुनषानी
सरल सुसील धरमरत राऊ ।सो किमि जानइतीयसुभाऊ
अस को जीव जंतु जग माहीं ।जेहि रघुनाथ प्रानप्रियनाहीं
भे अति आहितरामुतेउतोही।को तूं अहसि सत्यकहु मोही
जोहसिसोहसिमुहुंमासिलाई। आंषि ओटउठिबैठहिजाई
दोहा॥ राम बिरोधीहृदयतें प्रगटकीन्ह बिधि मोहिं ।
मो समान को पातकी बादिकहौंकछु तोहिं॥६२॥

सुनिसत्रुघुन मातुकुटिलाई । जरहिं गात रिस कछुनबसाई
तेहि अवसर कुबरीतहं आई । बसनबिभूषन बिबिध बनाई
लषिरिसभरेउलषनलघुभाई । बरतअनलघृतआहुति पाई
हुमगि लात तकि कूबर मारा । परिमुहभरिमहिकरतपुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू । दलितदसनमुष रुधिरप्रचारू
आह दइअमै काह नसावा । करतनीकफलुअनइस पावा
सुनिरिपुहनलषिनषासिषषोटी । लगेघसीटनधरिधरिझोंटी
भरतदयानिधिदीन्हि छुडाई । कौसल्यापहिंगे दोउ भाई

दोहा ॥ मलिनबसन बिबरनाबिकल कृससरीर दुषभारु ।
कनककलपवर बेलि बन मानहुं हनी तुसारु ॥६३॥

भरताहिदेषिमातु उठिधाई । मुरुछितअवनि परी झइंआई
देषत भरतु बिकल भये भारी । परेचरन तनदसा बिसारी
मातु तात कहं देहि देषाई । कहंसियरामुलषनु दोउ भाई
कइकइ कत जनमी जग मांझा । जौंजनमित भइकाहेनबांझा
कुलकलंकु जेहि जनमेउ मोही । अपजसभाजनप्रियजनद्रोही
कोत्रिभुवनमोहिसरिसअभागी । गतिअसितोरिमातुजेहिलागी
पितु सुरपुर बन रघुबर केतू । मैकेवल सब अनरथ हेतू
धिगमोहिभएउं बेनुबन आगी । दुसहदाहदुष दूषनभागी

दोहा ॥ मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी संभारि ।
लिएउठाइ लगाइउर लोचन मोचति बारि ॥ ६४ ॥

सरलसुभायमाय हिय लाए । अतिहितमनहुंरामफिरिआए
भेंटेउ बहुरि लषन लघुभाई । सोकु सनेहु न हृदय समाई
देषि सुभाउ कहत सब कोई । राममातु अस काहे न होई
माता भरतु गोद बैठारे । आंसु पोंछि मृदुबचन उचारे

अजहुं बच्छु बलिधीरजुधरहू। कुसमउ समुझि सोकपरिहरहू
जनिमानहुंहियंहानिगलानी। कालकरमगतिअघटितजानी
काहुहि दोसुदेहु जनिताता। भामोहिसबबिधिबामबिधाता
जोएतेहु दुष मोहि जिआवा। अजहुंको जानइका तेहि भावा

दोहा ॥ पितुआयेसु भूषन बसन तात तजे रघुबीर ।
बिसमउ हरषु न हृदयं कछु पहिरें बलकल चीर ॥६५॥

मुषप्रसंन मन रंग न रोषू । सबकरसबबिधिकरि परितोषू
चलेबिपिनसुनि सियसंगलागी। रहइनरामचरन अनुरागी
सुनतहिं लषनु चले उठिसाथा। रहहिंन जतनकियेरघुनाथा
तब रघुपति सबही सिरुनाई । चले संगसिय अरु लघुभाई
रामुलषनुसिय बनहिं सिधाए। गइउं न संग न प्रानपठाए
एहुसबु भाइन्ह आंषिन्हआगें। तउन तजा तनुजीव अभागें
मोहिन लाजनिजनेहु निहारी। रामसरिस सुत मै महतारी
जिअइमरइभल भूपतिजाना। मोरहृदय सत कुलिससमाना

दोहा ॥ कौसल्या के बचन सुनि भरतसहित रनिबांसु।
ब्याकुल बिलपत राजगृह मानहुं सोकनिवासु ॥६६॥

बिलपहिंबिकल भरतदोउभाई। कौसल्या लिए हृदयंलगाई
भांति अनेक भरतु समुझाए। कहि बिबेकमय बचन सुनाए
भरतहु मातु सकल समुझाई।कहिपुरान श्रुति कथासुहाई
छलबिहीनसुचि सरलसुबानी। बोले भरत जोरि जुगपानी
जे अघ मातु पितासुत मारें। गाइगोठ महि सुरपुरजारें
जे अघ तिय बालक बध कीन्हे। मीत महीपति माहुर दीन्हे
जे पातक उपपातक अहहीं।करम बचन मन भवकबिकहहीं
ते पातक मोहि होंहु बिधाता।जौं एहु होइ मोर मतमाता

दोहा॥ जे परिहरि हरिहरचरन भजहिं भूतगन घोर।
तिन्हकइगति मोहि देउबिधि जौंजननीमतमोर॥९७॥

बेचहिं बेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं
कपटी कुटिलकलहप्रिय क्रोधी। बेदबिदूषक बिस्वबिरोधी
लोभी लंपट लोलुपचारा। जे ताकहिं परधनु परदारा
पावउं मै तिन्ह कै गति घोरा। जौं जननी एहु संमत मोरा
जे नहिं साधुसंग अनुरागे। परमारथपथ बिमुख अभागे
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई। जिन्हहिनहरिहरसुजसुसुहाई
तजिश्रुतिपंथु बामपथ चलहीं। बंचकबिरचि बेषु जगु छलहीं
तिन्हकइगति मोहिसंकरदेऊ। जननी जौं एहु जानउं भेऊ

दोहा॥ मातु भरत के बचन सुनि सांचे सरल सुभायं।
कहति रामप्रिय तात तुम्ह सदा बचन मन कायं॥९८॥

राम प्रानहुतें प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहुतें प्यारे
बिधुबिष चवइश्रवइ हिमुआगी। होइबारिचर बारिबिरागी
भये ग्यानु बरु मिटइ न मोहू। तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू
मत तुम्हारएहजोजगकहहीं। सोसपनेंहुसुखुसुगतिनलहहीं
असकहि मातु भरतुहियलाये। थनपयश्रवहिं नयनजलछाये
करतबिलाप बहुत एहिभांती। बैठेहिं बीति गई सब राती
बामदेउ बासिष्ठ तब आए। सचिवमहाजन सकल बोलाए
मुनि बहुभांति भरत उपदेसे। कहि परमारथ बचन सुदेसे

दोहा॥तात हृदय धीरजु धरहु करहु जो अवसर आजु।
उठे भरत गुरबचन सुनि करन कहेउ सबुसाजु॥९९॥

नृपतनु बेद बिहित अन्हवावा। परमबिचित्र बिमानु बनावा
गहि पग भरत मातुसब राखीं। रहीं राम दरसन अभिलाषीं
चंदन अगर भार बहु आए। अमित अनेक सुगंध सुहाए

सरजुतीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपानसुहाई
एहिबिधिदाहक्रियासबकीन्ही।बिधिवतन्हाइतिलांजुलिदीन्ही।
सोधि सुमृतिसब बेद पुराना ।कीन्ह भरत दसगातबिधाना
जहंजसमुनिबरआयेसुदीन्हातहंतससहस भांतिसबुकीन्ह।
भये बिसुद्ध दियेसबदाना । धेनु बाजिगज बाहननाना

दोहा ॥ सिंहासन भूषन बसन अन्न धरनि धन धाम ।
दिये भरत लहि भूमिसुर भेपरिपूरनकाम ॥७०॥

पितुहित भरतकीन्हिजसिकरनी ।सोमुषलाषजाइनहिबरनी
सुदिनु सोधिमुनिबरतबआए।सचिवमहाजनसकलबोलाए
बैठेराजसभा सब जाई । पठएै बोलि भरत दोउ भाई
भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे । नीति धरममयबचन उचारे
प्रथमकथासबमुनिबरबरनीकइकइकुटिलकीन्हिजसिकरनी
भूप धरमब्रतु सत्य सराहा । जेहितनुपरिहरिप्रेमु निबाहा
कहत रामगुनसीलुसुभाऊ । सजलनयन पुलकेउमुनिराऊ
बहुरिलषनसियप्रीतिबषानी।सोक सनेह मगनमुनिग्यानी

दोहा ॥ सुनहुं भरत भावीप्रबल बिलषिकहेउमुनिनाथ ।
हानिलाभुजीवनुमरनु जसुअपजसुबिधिहाथ ॥७१॥

असबिचारिकेहिदेइअदोसू । ब्यरथकाहिपरकीजिअरोसू
तात बिचारुकरहु मनमाहीं । सोचुजोगुदसरथुनृपु नाहीं
सोचिअबिप्र जोबेदबिहीना ।तजिनिजधरमुबिषयलयलीना
सोचिअनृपतिजोनीतिनजाना ।जेहिनप्रजाप्रियप्रानसमाना
सोचिअबयसुकृपनधनवानू।जोनअतिथिसिवभगतिसुजानू
सोचिअसूद्रबिप्र अवमानी । मुषरुमानप्रिय ग्यानगुमानी
सोचिअपुनिपतिबंचकनारी। कुटिलकलहप्रियइच्छाचारी

सोचिअबटुनिजब्रतुपरिहरई। जोनहि गुरुआयसु अनुसरई

दोहा ॥ सोचिअगृही जो मोहबस करइकरमपथ त्याग।
सोचिअजतीप्रपंचरत बिगत बिबेकबिराग॥७२॥

बैषानस सोइ सोचन जोगू। तपु बिहाइ जेहिभावइ भोगू
सोचिआपिसुनअकारनक्रोधी। जननिजनकगुरुबंधुबिरोधी
सबबिधिसोचिअपरअपकारी।निजतनुपोषकनिरदय भारी
सोचनीअसबहीबिधि सोई। जोनछाडिछलुहरिजन होई
सोचनीय नहि कोसलराऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ
भएउ न अहइनअबहोनिहारा। भूपभरतजसपितातुम्हारा
बिधिहरिहरसुरपातिदिसिनाथाबरनहिंसबदसरथगुनगाथा

दोहा ॥ कहहुतात केहि भांति कोउ करिहिबडाईतासु।
रामलषनतुम्ह सत्रुहन सरिससुअनसुचिजासु॥७३॥

सबप्रकार भूपतिबडभागी। बादिबिषादुकरिअतेहिलागी
एहुसुनिसमुझिसोचुपरिहरहू। सिर धरि राजरजायसुकरहू
रायं राजपदुतुम्हकहं दीन्हा।पिताबचनुफुरचाहिअकीन्हा
तजेरामुजेहिबचनहि लागी। तनु परिहरेउ रामबिरहागी
नृपहिबचनप्रियनाहिप्रियप्राना। करहुतात पितुबचनप्रवाना
करहु सीस धरि भूपरजाई। हइतुम्हकहं सबभांति भलाई
परसुराम पितुअग्या राषी। मारी मातु लोग सब साषी
तनयजजातिहिजौबनुदयेऊ। पितुअग्याअघअजसुनभयेऊ

दोहा ॥ अनुचितउचित बिचारु तजि जेपालिहिपितुबयन
तेभाजनसुषसुजसुके बसहिंअमरपतिअयन॥७४॥

अवसिनरेसबचनफुर करहू। पालहुप्रजा सोकु परिहरहू
सुरपुर नृपुपाइहि परितोषू। तुम्हकहुंसुकृतुसुजसुनहिदोषू

बेदबिदित संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावइ टीका
करहु राजु परिहरहु गलानी । मानहुं मोर बचन हित जानी
सुनि सुषु लहब राम बैदेहीं । अनुचित कहब न पंडित केहीं
कौसल्यादि सकल महतारीं । तेउ प्रजा सुष होंहि सुषारी
परम तुम्हार राम कर जानिहि सो सब बिधि तुम्ह सन भल मानिहि
सौंपेहु राजु राम कें आएं । सेवा करेहु सनेह सुहाएं

दोहा ॥ कीजिअ गुर आयसु अवसि कहहिं सचिव कर जोरि ।
रघुपति आए उचित जस तस तब करब बहोरि ॥७५॥

कौसल्या धरि धीरजु कहई । पूत पथ्य गुर आयेसु अहई
सो आदरिअ करिअ हित मानी तजिअ बिषादु काल गति जानी
बन रघुपति सुरपति नरनाहू । तुम्ह एहि भांति तात कदराहू
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा । तुम्हहीं सुत सब कहं अवलंबा
लषि बिधि बाम कालु कठिनाई । धीरजु धरहु मातु बलि जाई
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू । प्रजा पालि परिजन दुषु हरहू
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु । सुने भरत हिय हित जनु चंदनु
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी । सील सनेह सरल रस सानी

छंद ॥ सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरतु ब्याकुल भये ।
लोचन सरोरुह श्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये ॥
सो दसा देषत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की ।
तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेह की ॥

सोरठा ॥ भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि ।
बचन अमिअ जनु बोरि देत उचित उत्तर सबहि ॥७६॥

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका । प्रजा सचिव संमत सबही का
मातु उचित धरि आयेसु दीन्हा । अवसि सीस धरि चाहौं कीन्हा

गुरु पितु मातु स्वामिहितबानी।सुनि मनमुदितकरिअभलिजानी।
उचित कि अनुचितकियेंबिचारू।धरमुजाइसिरपातकभारू
तुम्हतउदेहुसरलसिषसोई।जो आचरत मोर भलहोई
जद्यपिएहसमुझतहउँ नीकें।तदपि होतपरितोषु न जीकें
अबतुम्हबिनयमोरिसुनिलेहू।मोहि अनुहरतसिषावनुदेहू
उतरुदेउं छमब अपराधू।दुषितदोषगुनगनहिंनसाधू

दोहा॥ पितुसुरपुर सियरामुबनकरन कहहुमोहिराजु।
एहितेंजानहुं मोरहित कै आपन बड काजु॥७७॥

हितहमारसियपतिसेवकाई।सोहरि लीन्हमातुकुटिलाई
मैअनुमानि दीषिमनमाहीं।आन उपाय मोरहितनाहीं
सोकसमाजुराजुकेहि लेषें।लषनराम सियबिनुपद देषें
बादिबसन बिनुभूषनभारू।बादि बिरति बिनु ब्रह्मबिचारू
सरुज सरीर बादि बहु भोगा।बिनुहरिभगतिजायंजपजोगा
जांय जीव बिनु देह सुहाई।बादि मोर सबु बिनु रघुराई
जाउं राम पहिं आयेसु देहू।एकहि आंक मोर हित एहू
मोहिनृपकरिभलआपनचहहू।सोउ सनेहजडतावसकहहू

दोहा॥ कैकेईसुअ कुटिलमति रामबिमुष गतलाज।
तुम्हचाहत सुषुमोहवसमोहिसे अधमुके राज॥७८॥

कहौंसांचुसबसुनिपतिआहू।चाहिअ धरमसीलनरनाहू
मोहिराजुहठिदेइहहु जबहीं।राज रसातल जाइहितबहीं
मोहिसमानकोपापनिवासू।जेहि लगि सीयरामबनबासू
रावैरामकहुं काननुदीन्हा।बिछुरत गमनुअमरपुरकीन्हा
मैसठु सब अनरथ कर हेतू।बैठ बात सब सुनउं सचेतू
बिनु रघुबीर बिलोकिअबासू।रहे प्रान सहि जग उपहासू

राम पुनीत बिषयरस रूखे । लोलप भूमिभोग के भूखे
कहंलगिकहौं हृदयकठिनाई। निदरिकुलिसुजेंहिलहीबडाई

दोहा ॥ कारनतें कारजु कठिन होइ दोसु नहिंमोर ।
कुलिस अस्थितें उपलतें लोहकराल कठोर।। ७९॥

कैकेई भव तनु अनुरागे । पावन प्रान अघाइ अभागे
जौंप्रियबिरह प्रान प्रियलागे।देषब सुनब बहुत अब आगें
लषनरामासियकहुंबनुदीन्हा। पठइअमरपुरपतिहितकीन्हा
लीन्ह बिधवपन अपजसुआपू।दीन्हेउ प्रजहिं सोकु संतापू
मोहिदीन्हसुष सुजसुसुराजू । कीन्ह कैकेई सब कर काजू
एहि तें मोर काह अब नीका । तेहिपरदेनकहहुतुम्ह टीका
कैकइजठर जनमिजग माहीं।यहमोहिकहंकछुअनुचितनाहीं
मोरिबात सब बिधिहिंबनाई।प्रजा पांच कत करहु सहाई

दोहा॥ग्रहग्रहीत पुनि बातबस तेहि पुनि बीछी मार ।
तेहि पिआइअबारुनी कहहु काह उपचार ॥८०॥

कैकइसुअनजोगुजग जोई । चतुरबिरंचि दीन्हमोहि सोई
दसरथतनय राम लघु भाई ।दीन्हिमोहि बिधि बादिबडाई
तुम्ह सब कहहु कढावनटीका। रायरजायसु सब कहं नीका
उतरुदेउंकेहिबिधि केहिकेही । कहहु सुषेन जथा रुचि जेही
मोहि कुमातु समेत बिहाई ।कहहु कहिहि के कीन्हि भलाई
मो बिनु को सचराचर माहीं। जेहि सियरामु प्रानप्रियनाहीं
परमहानि सबु कहं बड लाहू । अदिनुमोरनहिदूषन काहू
संसय सील प्रेम बस अहहू । सबुइ उचितसबुजोकछुकहहू

दोहा ॥ राममातु सुठिसरलचित मो पर प्रेमु बिसेषि ।
कहइ सुभाय सनेहबस मोरि दीनता देषि ॥८१॥

गुराबिबेकसागर जगु जाना। जिन्हहिंबिस्वकरबदरसमाना
मोकहंतिलकसाजसजसोऊ भयेंबिधिबिमुषबिमुषसबुकोऊ
परिहरि रामुसीय जग माहीं। कोउनकहिहिमोरमतनाहीं
सो मैं सुनब सहब सुषमानी। अंतहुकीच तहां जहं पानी
डरु न मोहिजगकहहिकिपोचू।परलोकहु कर नाहिन सोचू
एकइ उर बस दुसह दवारी। मोहिलगिभेसियरामुदुषारी
जीवनलाहु लषन भल पावा। सबुतजिरामचरनमनुलावा
मोर जनम रघुबरबन लागी। झूठकाहपछिताउं अभागी

दोहा ॥ आपनि दारुन दीनता कहउं सबहिसिरु नाइ।
देषे बिनु रघुनाथ पद जिअकै जरनि न जाइ॥८२॥

आन उपाउ मोहिं नहिं सूझा। को जिअ कै रघुबर बिनुबूझा
एकहि आंक इहै मन माहीं। प्रातकाल चलिहौंप्रभुपाहीं
जद्यपि मै अनभल अपराधी।भै मोहि कारन सकलउपाधी
तदापिसरनसनमुषमोहिदेषी।छमिसबकरिहहिंकृपाबिसेषी
सीलुसकुचिसुठिसरलसुभाऊ। कृपा सनेह सदन रघुराऊ
अरिहु कअनभल कीन्हनरामा। मै सिसुसेवकजद्यपि बामा
तुम्ह पै पांच मोर भल मानी।आयेसु आसिषदेहुसुबानी
जेहिसुनिबिनयमोहिजनुजानी।आवहिंबहुरि रामु रजधानी

दोहा ॥ जद्यपिजनमु कुमातु तें मै सठु सदा सदोस।
आपन जानि न त्यागिहंहिमोहिरघुबीरभरोस॥८३॥

भरतबचनसबकहंप्रियलागे। मंत्रसबीज सुनतजनुजागे
मातुसचिव गुरपुर नरनारी। सकलसनेह बिकलभयेभारी
भरतहिंकहहिंसराहिसराही।राम प्रेम मूरति तनुआही
तातभरतअस काहे नकहहू। प्रानसमान रामप्रिय अहहू

जोपांवरुअपनीं जडताई ।तुम्हहि सुगाइ मातुकुटिलाई
सोसठुकोटिकि पुरुष समंता । बसाहिंकलपसतनरकनिकेता
अहिअघअवगुननहिमनिगहई । हरइगरलदुषदारिददहई

दोहा॥अवासि चलिअ बन रामु जहं भरत मंत्रु भलकीन्ह।
सोकसिंधु बूडत सबहिं तुम्हअवलंबनुदीन्ह ॥८४॥

भासबकेंमनमोदु न थोरा ।जनु घनधुनि सुनि चातक मोरा
चलतप्रात लखि ।निरनउनीकें । भरतु प्रानप्रिय भे सबहीकें
मुनिहिं बंदि भरतहिसिरुनाई। चले सकल घर बिदा कराई
धन्य भरत जीवनु जग माहीं । सीलु सनेह सराहत जाहीं
कहहिं परसपर भा बडु काजू।सकल चलइ कर साजहिंसाजू
जेहि राषहिं रहु घररषवारी ।सो जानइ जनु गरदनि मारी
कोउकहरहनकाहिअनाहिकाहू । को न चहइ जग जीवनलाहू

दोहा॥जरउ सो संपति सदनसुषु सुहृद मातु पितु भाइ ।
सनमुष होत जो रामपद करइ न सहस सहाइ॥८५॥

घरघरसाजहिंबाहन नाना । हरषुहृदयं परभातपयाना
भरतजाइ घर कीन्ह बिचारू ।नगरुबाजिगजभवनभंडारू
संपति सबरघुपति कै आही ।जौंबिनुजतनुचलौंताजिताही
तौपरिनाम न मोरिभलाई । पापासिरोमनि साइंदोहाई
करइस्वामिहित सेवकु सोई । दूषन कोटि देइ किनकोई
अस बिचारिसुचि सेवक बोले । जेसपनेहुं निजधरमुनडोले
कहिसबु मरमुधरमु भल भाषा ।जो जेहिलायकसो तेहिराषा
करिसबुजतनु राषि रषवारे । राममातु पहिंभरतसिधारे
दोहा ॥ आरत जननीजानि सबुभरत सनेह सुजान ।
कहेउ बनावन पालकी सजन सुषासनजान॥८६॥

चक्क चाकि जिमि पुर नरनारी।चलत प्रात उरआरत भारी
जागतसबनिसिएउबिहाना। भरत बोलाएसचिवसुजाना
कहेउ लेहु सब तिलकसमाजू।बनहिं देव मुनि रामहिं राजू
बेगिचलहुसुनिसचिवजोहारे। तुरततुरग रथनाग संवारे
अरुंधती अरु अगिनिसमाऊ। रथचढि चले प्रथम मुनिराऊ
बिप्रबृंद चढि बाहन नाना । चले सकल तप तेज निधाना
नगरलोगसबसजिसजिजाना। चित्रकूट कहं कीन्ह पयाना
सिबिका सुभग नजांहिबषानी।चढिचढि चलत भईसबरानी

दोहा।।सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ ।
सुमिरि रामसियचरनतबचलेभरतदोउभाइ ।।८७।।

राम दरस बस सब नरनारी।जनुकरिकारिनि चले ताकि बारी
बन सियरामुसमुझिमनमाहीं ।सानुजभरतपयादेंहि जाहीं
देषि सनेहु लोग अनुरागे । उतरिचले हय गय रथत्यागे
जाइ समीप राषि निजडोली। राममातु मृदुबानी बोली
तात चढहु रथ बलि महतारी।होइहि प्रियपरिवारु दुषारी
तुम्हरेचलत चलिहिसबुलोगू। सकलसोककृसनहिंमगजोगू
सिरधरिबचन चरन सिरुनाई। रथचढिचलतभएदोउभाई
तमसाप्रथमादिवस करिबासू। दूसर गोमतितीर निवासू
दोहा ।।पयअहार फलअसन एक निसिभोजनएकलोग ।
करत रामहित नेम ब्रत परिहरि भूषन भोग ८८

सई तीर बासिचले बिहाने। शृंगबेरपुर सब निअराने
समाचार सब सुने निषादा। हृदयंबिषादकरै सबिषादा
कारनकवन भरतु बनजाहीं। हैकछु कपटभाउमन माहीं
जौंपै जियं नहोति कुटिलाई। तौकत लीन्ह संगकटकाई

जानहिं सानुज रामहिमारी । करौं अकंटक राजु सुषारी
भरत न राजनीति उरआनी। तब कलंकु अब जीवनुहानी
सकलसुरासुर जुरहिंजुझारा। रामहि समर न जीतनिहारा
काआचरजुभरतुअसकरहींनहिंबिषबेलिअमिअफलफरहीं

दोहा॥अस बिचारुगुह ग्याति सन कहेउ सजगसबहोहु।
हथबांसहु बोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु। ८९।

होहु संजोइल रोकहु घाटा। ठाटहु सकल मरइ के ठाटा
सनमुष लोह भरत सन लेऊं।जिअत न सुरसरिउतरनदेऊं
समरु मरनुपुनि सुरसरितीरा। रामकाजु छनभंगु सरीरा
भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू। बडे भाग आसि पाइअमीचू
स्वामिकाज करिहहु रनरारी। जस धवलिहउभुवनदसचारी
तजउं प्रान रघुनाथ निहोरें। दुहूं हाथ मुदमोदक मोरें
साधुसमाज न जा कर लेषा। राम भगत महुं जासु नरेषा
जांयंजियतजगसो महि भारू। जननी जौबन बिटप कुठारू

दोहा॥बिगतबिषाद निषादपति सबहि बढ़ाइ उछाहु।
सुमिरि राम मांगेउ तुरत,तरकस धनुष सनाहु॥९०॥

बेगहु भाइहु सजहु संजोऊ। सुनि रजाइ कदराइ न कोऊ
भलेंहिनाथसबकहहिं सहरषा। एकहिं एक बढावइ करषा
चले निषाद जोहारि जोहारी। सूर सकल रन रूचै रारी
सुमिरि राम पदपंकज पनहीं। भाथी बांधिचढाइन्हि धनहीं
अंगरी पहिरि कूंडिसिर धरहीं। फरसा बांस सेलसमकरहीं
एक कुसलअति ओडनषांडें। कूदहिं गगन मनहुंछितिछांडें
निज निज साजु समाजुबनाई। गुहराउतहिं जोहारे जाई
देषि सुभट सब लायक जाने। लै लै नाम सकल सनमाने

दोहा ॥ भाइहु लावहु धौंष जनि आजु काज बड मोहि ।
सुनि सरोष बोले सुभट बीरु अधीरु न होहि ॥९१॥

रामप्रताप नाथ बल तोरें । करहिंकटकुबिनुभटबिनुघोरें
जीवत पाउ न पाछें धरहीं । रुंड मुंडमय मेदिनि करहीं
दीष निषादनाथ भल टोलू । कहेउ बजाउ जुझाऊढोलू
एतना कहत छींक भइ बाएं। कहेउसगुनिअन्ह षेतसुहाएं
बूढु एकु कह सगुन बिचारी ।भरतहिमिलिअनहोइहिरारी
रामहि भरतु मनावन जाहीं । सगुन कहइ अस बिग्रहुनाहीं
सुनि गुह कहइनीककह बूढा।सहसा करिपाछिताहिंबिमूढा
भरतसुभाउ सीलुबिनुबूझें । बाडिहितहानि जानिबिनुजूझें

दोहा॥गहहु घाट भट सिमिटि सब लेउं मरम मिलिजाइ ।
बूझि मित्र अरि मध्य गति तब तस करिहउं आइ॥९२॥

लषब सनेहु सुभायं सुहाएं । बैरु प्रीति नहिदुरइं दुराएं
अस कहि भेंट संजोवन लागे। कंद मूल फल षग मृग मागे
मीन पीन पाठीन पुराने ।भरिभरिभार कहारन्हआने
मिलनसाजुसजिमिलनसिधाए। मंगलमूल सगुन सुभपाए
देषिदूरि तें कहि निजनामू । कीन्ह मुनीसहि दंडप्रनामू
जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा।भरतहिकहेउबुझाइमुनीसा
रामसषा सुनि संदनु त्यागा।चले उतरि उमगत अनुरागा
गाउं जाति गुह नाउं सुनाई ।कीन्ह जोहारु माथ महि लाई

दोहा॥करत दंडवत देषि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ ।
मनहुं लषन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदयं समाइ॥९३॥

भेंटत भरतु ताहि अतिप्रीती। लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती
धन्य धन्य धुनि मंगलमूला।सुरसराहितेहिबरिसहिंफूला

लोक बेद सब भांतिहि नीचा। जासु छाहं छुइ लेइअसींचा
तेहि भरि अंक रामलघुभ्राता।मिलत पुलकपरिपूरितगाता
राम रामकहि जे जमुहाहीं।तिन्हहि न पापपुंजसमुहाहीं
येहि तौ राम लाइ उर लीन्हा।कुलसमेत जगु पावनकीन्हा
करमनास जलु सुरसरि परई।तेहि कोकहहुसीसनहिधरई
उलटा नामु जपत जगु जाना।बालमीकि भये ब्रह्मसमाना

दोहा॥स्वपच सबर षस जमन जड पांवर कोल किरात।

रामु कहत पांवर परम होत भुवन बिष्यात ॥९४।

नहिंआचिरिजुजुगजुग चलिआई।केहिनदीन्हिरघुबीरबडाई
रामनाम महिमा सुरकहहीं।सुनि सुनि अवधलोगसुषुलहहीं
रामसषहिं मिलि भरतु सप्रेमा।पूंछी कुसल सुमंगल षेमा
देषिभरत कर सीलु सनेहू।भानिपादतेहिसमग बिदेहू
सकुच सनेहु मोदुमन बाढा।भरतहि चितवतएकटक ठाढा
धरिधीरजु पद बंदि बहोरी। ।बिनय सप्रेम करत कर जोरी
कुसल मूल पदपंकज पेषी।मै तिहुं काल कुसलनिजलेषी
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें। सहित कोटिकुल मंगल मोरें

दोहा॥समुझि मोरिकरतूतिकुल प्रभु महिमा जिअ जोइ।

जो न भजइ रघुबीरपद जग बिधिबंचितसोइ॥९५॥

कपटी कायरु कुमति कुजाती।लोक बेद बाहेर सब भांती
राम कीन्ह आपन जबही तें।भयउं भुवनभूषन तबहीं तें
देषिप्रीति सुनि बिनय सुहाई।मिलेउ बहोरि भरत लघुभाई
कहि निषाद निज नाम सुबानी।सादर सकल जोहारी रानी
जानि लषनसम देहिंअसीसा।जिअहुसुषीसयलाषबरीसा
निरषि निषाद नगर नर नारी।भये सुषी जनु लषनु निहारी

कहहिं लहेउ एहि जीवन लाहू। भेंटेउ रामभद्र भरि बाहू
सुनि निषादु निज भाग बडाई। प्रमुदित मन लइ चलेउ लेवाई

दोहा ॥ सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुषु पाइ ।
घर तरु तर सर बाग बन बास बनाएन्हि जाइ॥९६॥

शृंगबेरपुर भरत दीष जब। भे सनेह सब अंग सिथिल तब
सोहत दिए निषादहि लागू। जनु धनु धरें बिनय अनुरागू
एहि बिधि भरत सेनु सबु संगा। दीषु जाइ जगपावनि गंगा
रामघाट कहं कीन्ह प्रनामू। भा मनु मगनु मिले जनु रामू
करहिं प्रनाम नगर नर नारी। मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी
करि मज्जनु मांगहिं कर जोरी। रामचंद्र पद प्रीति न थोरी
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू। सकल सुखद सेवक सुर धेनू
जोरि पानि बर मागउं एहू। सीयरामपद सहज सनेहू

दोहा ॥ एहि बिधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन पाइ।
मातु नहानीं जानि सब डेरा चले लवाइ ॥ ९७ ॥

जहं तहं लोगन्ह डेरा कीन्हा। भरत सोधु सबही कर लीन्हा
सुरसेवा करि आयेसु पाई। राममातु पहिं गे दोउ भाई
चरन चांपि कहि कहि मृदु बानी जननी सकल भरत सनमानी
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई। आपु निषादहि लीन्ह बोलाई
चले सषा कर सों कर जोरें। सिथिल सरीरु सनेहु न थोरें
पूंछत सषहि सो ठाउं देषाऊ। नेकु नयन मन जरनि जुडाऊ
जंह सिय रामु लषनु निसि सोए। कहत भरे जल लोचन कोए
भरत बचन सुनि भयेउ बिषादू। तुरत तहां लइ गयेउ निषादू

दोहा ॥ जहं सिंसुपा पुनीत तरु रघुबर किये बिश्रामु।
अति सनेह सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु॥९८ ॥

कुससांथरीनिहारि सुहाई। कीन्ह पनामु प्रदछिन जाई
चरनरेषरज आंषिन्ह लाई। बनइनकहत प्रीति अधिकाई
कनकबिंदु दुइ चारिक देषे। राषे ससि सीयसम लेषे
सजलबिलोचन हृदयगलानी। कहतसषासन बचन सुबानी
श्रीहत सीयबिरह दुतिहीना। जथाअवध नरनारिबिलीना
पिता जनकदेउं पटतर केही। करतलभोगुजोगु जग जेही
ससुर भानुकुलभानुभुआलू। जेहिसिहात अमरावतिपालू
प्राननाथु रघुनाथ गोसांई। जो बड होत सो रामबडांई

दोहा॥ पतिदेवता सुतीयमनि सीय सांथरी देषि।
बिहरतहृदउ न हहरिहरपतितेंकठिनबिसेषि॥१९९॥

लालनजोगुलपन लघु लोने। भे न भाइ अंसेअहहिंन होने
पुरजन प्रिय पितु मातुदुलारे। सिय रघुबीरहि प्रानपिआरे
मृदुमूरति सुकुमार सुभाऊ। तातिबाउ तन लाग न काऊ
तेबनसहहिंबिपतिसबभांती। निदरेकोटिकुलिसएहिछाती
रामजनमिजगुकीन्ह उजागर। रूपसीलसुषसब गुनसागर
पुरजनपरिजन गुरपितु माता। रामसुभाउ सबहिसुषदाता
बैरिउ रामबडाई करहीं। बोलनिमिलनिबिनयमनहरहीं
सादरकोटिकोटिसन सेषा। करिनसकहिंप्रभुगुनगनलेषा

दोहा॥ सुषसरूप रघुबंसमनि मंगल मोद निधान।
तेसोवतकुसडासि महिबिधिगति अतिबलवान॥२००॥

रामसुना दुषु कानन काऊ। जीवनतरु जिमिजोगवइ राऊ
पलकनयनफनिमनिजेहिभांतीजोगवहिंजननिसकलदिनराती
ते अबफिरत बिपिन पदचारी। कंदमूल फलफूल अहारी
धिग कैकई अमंगलमूला। भइसिप्रानप्रियतमप्रतिकूला

मैधिगधिग अघउदधिअभागी।सबुउतपातुभएउजेहिलागी
कुलकलंकुकरि सृजेउ बिधाता।सांइदोह मोहिकीन्हकुमाता
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू। नाथ करिअ कतबादिबिषादू
रामतुम्हहिंप्रियतुम्हप्रियरामहिं।एहनिरजोसुदोसुबिधिबामहिं

छंदु॥बिधि बामकी करनी कठिन जेंहिमातु कीन्हीबावरी।
तेहि राति पुनि पुनिकरहिं प्रभु सादर सरहबारावरी॥
तुलसी न तुम्हसों राम प्रीतमु कहतहों सोहैं किये।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिएं धीरजु हिये ॥

सोरठा॥अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन।
चलिअ करिअ बिश्रामु एह बिचारि दृढ आनिमन॥२०१॥

सषाबचन सुनिउर धरिधीरा। बास चलेसुमिरतरघुबीरा
एह सुधिपाइ नगर नर नारी। चले बिलोकन आरत भारी
परदाषिना करि करहिं प्रनामा। देहिं कैकइहि षोरिनिकामा
भरिभरिबारि बिलोचन लेहीं। बामबिधातहि दूषन देहीं
एक सराहहिं भरत सनेहू। कोउकह नृपति निबाहेउनेहू
निंदहिआपुसराहिनिषादहि। कोकहिसकइबिमोह बिषादहि
एहिबिधिरातिलोगुसबुजागा। भा भिनुसार गुदारा लागा
गुरहि सुनाव चढाइ सुहाई। नई नाव सब मातु चढाई
दंड चारि महं भा सबु पारा।उतरिभरततबसबहिसंभारा

दोहा॥प्रात क्रिया करिमातुपद बंदि गुरहि सिरनाइ।
आगें किये निषादगन दीन्हेउ कटकु चलाइ॥२॥

कियेउ निषादनाथु अगुआई। मातु पालकी सकल चलाई
साथ बोलाइ भाइलघु दीन्हा।बिप्रन्ह सहितगवनु गुरकीन्हा
आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू।सुमिरे लषनसहित सियरामू

गवने भरत पयादेहिं पाएं । कोतल संग जाहिं डोरिआएं
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा । होइअ नाथ अस्व असवारा
रामु पयादेहिं पाय सिधाए । हम कहँ रथगजबाजिबनाए
सिरभरजाउंउचितअसमोरा । सब तें सेवकधरमु कठोरा
देषिभरतगति सुनि मृदुबानी । सब सेवकगन गरहिंगलानी
दोहा॥भरत तीसेर पहर कहं कीन्ह प्रबेसु प्रयाग ।
कहतरामासिय राम सिय उमगि उमगिअनुराग॥१॥
झलकाझलकतपायन्ह कैसें । पंकजकोस ओसकन जैसें
भरतपयादेहि आएआजू । भयउ दुषित सुनि सकलसमाजू
षबरिलीन्हसब लोग नहाये । कीन्हप्रनामुत्रिबेनिहिआये
सबिधि सितासितनीरनहाने । दियेदानमहिसुर सनमाने
देषत स्यामल धवल हलोरे । पुलकि सरीर भरतकरजोरे
सकल कामप्रद तीरथराऊ । बेदबिदित जग प्रगट प्रभाऊ
मागउंभीषत्यागिनिजधरमू । आरत काहनकरइकुकरमू
असजियजानिसुजानसुदानी । सफलकरहिंजगजाचकबानी
दोहा॥अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउं निरबान ।
जनम जनम रति रामपद एह बरदानु न आन॥४॥
जानहुरामुकुटिल करिमोही । लोग कहउगुर साहिबद्रोही
सीता राम चरन रति मोरें । अनुदिन बढउअनुग्रहतोरें
जलदुजनमभरिसुरतिबिसारउ जाचतजलुपबिपाहनडारउ
चातकु रटनि घटें घटि जाई । बढें प्रेमु सब भांति भलाई
कनकहि बान चढइजिमिदाहें । तिमि प्रियतमं पदु नेमनिबाहें
भरतबचन सुनि मांझ त्रिबेनी । भइ मृदुबानि सुमंगलदेनी
तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू । राम चरन अनुरागअगाधू

बादिगलानि करहुमनमाहीं।तुम्ह समरामहिंकोउप्रियनाहीं

दोहा ॥ तनु पुलकेउ हिय हरषु सुनि बेनिबचन अनुकूल ।
भरत धन्य कहि धन्य सुर हराषित बरषाहिंफूल॥५॥

प्रमुदित तीरथ राज निवासी । बैषानस बटु गृही उदासी
कहहिं परसपरमिलिदसपांचा।भरत सनेहु सीलुसुचिसांचा
सुनत राम गुन ग्राम सुहाए । भरद्वाज मुनिबर पहिं आए
दंडप्रनामु करत मुनि देषे । मूरतिमंत भाग्य निज लेषे
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे ।दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे
आसनु दीन्ह नाइ सिरु बैठे । चहतसकुचगृहजनुभजि पैठे
मुनिपूंछबकछुयेह बड सोचू । बोलेरिषिलषिसीलु संकोचू
सुनहु भरतहमसबसुधिपाई। बिधिकरतबपरकिछुन बसाई

दोहा ॥ तुम्हगलानिजियजनि करहु समुझिमातुकरतूति।
तात कैकइहि दोसुनहिं गई गिरा मतिधूति ॥६॥

यहउ कहत भल कहिहि न कोऊ। लोकु बेदु बुधसंमत दोऊ
तात तुम्हार बिमलजसु गाई ।पाइहि लोकउ बेदु बडाई
लोक बेद संमत सबु कहई । जेहि पितु देइ राजु सो लहई
राउ सत्यब्रत तुम्हहिं बोलाई। देत राजु सुषु धरमु बडाई
रामगवनु बन अनरथमूला ।जोसुनिसकल बिस्व भइसूला
सो भावीबस रानि अयानी। करि कुचालिअंतहुंपाछितानी
तहउं तुम्हार अलपु अपराधू।कहइ सोअधमुअयानअसाधू
करतेहु राजुत तुम्हहि न दोसू।रामहि होत सुनत संतोसू

दोहा॥अब अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहिंउचितमतएहु।
सकल सुमंगल मूलजग रघुबर चरन सनेहु ॥ ७ ॥

सोतुम्हार धनु जीवनुप्राना । भूरिभागकोतुम्हहिंसमाना

यह तुम्हार आचरजु न ताता।दसरथ सुअन राम प्रियभ्राता
सुनहु भरत रघुबर मनमाहीं। प्रेमपात्रु तुम्हसम कोउनाहीं
लषनराम सीतहिंअतिप्रीती।निसिसबतुम्हहिसराहतबीती
जानामरमु नहात प्रयागा। मगन होंहि तुम्हरे अनुरागा
तुम्हपरअससनेहुरघुबर कें।सुखजीवनजगजसजडनर कें
यह न अधिकरघुबीर बडाई। प्रनत कुटुंब पाल रघुराई
तुम्ह तउ भरत मोरमत एहू। धरे देह जनु रामसनेहू

दोहा ॥ तुमकहंभरतकलंकयह हमसब कहं उपदेसु ।
रामभगतिरससिद्धिहित भा यह समउ गनेसु॥८॥

नवबिधुबिमल तातजसुतोरा। रघुबरकिंकरकुमुदचकोरा
उदितसदाअथइहिकबहूं ना।घटिहिनजगनभदिनादिनदूना
कोकतिलोकप्रीतिअतिकरहीं।प्रभुप्रतापरबिछबिहिनहरिहीं
निसिदिनसुखदसदासबकाहू। ग्रसिहिनकैकइकरतब राहू
पूरनराम सुप्रेम पियूषा। गुरअपमानदोष नहिं दूषा
रामभगत अबअमियअघाहूं। कीन्हेहुसुलभसुधाबसुधाहूं
भूप भगीरथ सुरसरिआनी। सुमिरतसकलसुमंगल खानी
दसरथगुनगनबरनिनजाहीं।अधिकुकहाजेहिसमजगनाहीं

दोहा ॥ जासुसनेहसकोचबस रामप्रगट भये आइ ।
जे हर हियनयननि कबहुं निरखे नहीं अघाइ॥९॥

कीरतिबिधु तुम्हकीन्हिअनूपा। जहंबसराम पेम मृग रूपा
तात गलानि करहु जियजाएं। डरहु दरिद्रहिपारसु पाएं
सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं। उदासीन तापसबन रहहीं
सब साधन कर सुफल सुहावा। लषनरामसियदरसनुपावा
तेहिफलकरफलु दरसतुम्हारा।सहितप्रयाग सुभागहमारा

भरतधन्यतुम्हजसु जसजयेऊ।कहिअसपेममगनमुनिभयेऊ
सुनिमुनिबचन सभासद हरषे। साधुसराहि सुमनसुरबरषे
धन्य धन्य धुनिगगनपयागा।सुनिसुनिभरतुमगनअनुरागा

दोहा ॥ पुलकगात हियं रामु सिय सजलसरोरुहनयन ।
करि प्रनामु मुनिमंडिलिहिबोलेगदगदबयन॥१०॥

मुनिसमाजु अरु तीरथराजू। सांचिहु सपथअघाइअकाजू
एहिथलजौंकिछुकाहिअबनाई एहिसमअधिकनअघअधमाई
तुम्ह सर्बग्य कहउं सतिभाऊ। उर अंतरजामी रघुराऊ
मोहिनमातुकरतबकर सोचू। नहिदुषजियंजगजानहिपोचू
नाहि न डरु बिगराहिपरलोकू। पितहुमरनकरमोहि नसोकू

सुकृत सुजसभरि भुवनसुहाए। लछिमनरामसरिससुतपाए
रामबिरह तजि तनु छनभंगू। भूप सोचकर कवन प्रसंगू
रामलषनसियबिनुपगपनहीं। करिमुनिबेषफिरहिंबनबनहीं

दोहा॥अजिनबसन फलअसनमहि सयनडासिकुसपात।
बसि तरुतरनितसहत हिमआतपबरषाबात॥११॥

एहिदुषदाहदहइ दिनछाती। भूप न बासर नीद न राती
एहि कुरोग कर औषधु नाहीं। सोधेउं सकलबिस्वमन माहीं
मातु कुमत बढई अघमूला। तेहिहमार हितकीन्हबंसूला
कलि कुकाठकरकीन्ह कुजंत्रू। गाडिअवधिपढिकठिनकुमंत्रू
मोहिलागियहुकुठाटुतेहिंठाटा। घालेसिसबजगुबारहबाटा
मिटइकुजोगुरामु फिरि आएं। बसइअवधनाहिंआनउपाएं
भरतबचन सुनिमुनि सुष पाई। सबहिंकीन्हिबहुभांतिबडाई
तात करहु जनिसोचुबिसेषी। सबदुषमिटिहिरामपगदेषी
दोहा ॥ करि प्रबोधु मुनिबर कहेउ अतिथिपेमप्रियहोहु ।

कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करिछोहु॥ १२॥

सुनिमुनिबचन भरताहियंसोचू भयेउ कुअवसरकाठिनसंकोचू
जानि गरुइ गुरगिरा बहोरी। चरन बंदि बोले कर जोरी
सिरधरिआयेसु करिअतुम्हारा।परमधरम येहु नाथहमारा
भरतबचन मुनिबर मन भाए।सुचिसेवकसिषनिकटबोलाए
चाहिअ कीन्हि भरतपहुनाई। कंदमूल फल आनहु जाई
भलेंहिनाथकहितिन्हसिरनाए।प्रमुदित निज काजासिधाए
मुनिहि सोचपाहुनबडनेवता। तसिपूजाचाहिअजसदेवता
सुनिरिधिसिधिअनिमादिकआईं। आयेसुहोइसोकराहिंगोसाईं

दोहा ॥ रामबिरह ब्याकुल भरतु सानुजसहितसमाज ।
पहुनाँई करि हरहुश्रमु कहामुदितमुनिराज॥ १३॥

रिधिसिधिसिरधरिमुनिबरबानी।बडभागिनिआपुहिअनुमानी
कहहिंपरसपर सिधिसमुदाईअतुलितअतिथिरामलघुभाई
मुनिपदबंदि करिअसोइ आजू। होइ सुषीसबराजसमाजू
असकहिरचेउरुचिरगृहनाना।जेहिबिलोकिबिलषाहिंबिमाना
भोग बिभूतिभूरिभरिराषे। देषतजिन्हहि अमरअभिलाषे
दासीदास साजु सब लीन्हे। जोगवतरहहिंमनहिमनुदीन्हे
सबसमाजुसजिसिधिपलमाहीं। जेसुषसुरपुरसपनेहुनाहीं
प्रथमहिंबासदिये सबकेही। सुंदरसुषद जथारुचि जेही

दोहा॥बहुरिसपरिजनभरतकहुं रिषिअसआयेसुदीन्ह ।
बिधिबिसमयदायकुबिभव मुनिबरतपबलकीन्ह॥ १४

मुनिप्रभाउजबभरतबिलोका। सबलघुलगेलोकपति लोका
सुषसमाजुनहिजाइबषानी । देषतबिरति बिसारहिं ग्यानी
आसनसयनसुबसनबिताना। बनबाटिकाबिहग मृग नाना

सुरभिफूलफलअमिअसमाना।बिमलजलासयबिबिधबिधाना
असनपानसुचिअमिअअमीसे। देषिलोगसकुचातजमी से
सुरसुरभीसुरतरु सबही कें। लषिअभिलाषुसुरेससचीकें
रितुबसंतबह त्रिबिधबयारी। सबकहंसुलभ पदारथचारी
स्रकचंदनबनितादिक भोगा। देषिहरषबिसमयबस लोगा

दोहा ॥ संपतिचकई भरतुचक मुनिआयसु षेलवार ।
तोहिनिसि आस्रमपिंजरां राषेभा भिनुसार ॥१५॥

कीन्हनिमज्जनुतीरथराजा।नाइमुनिहिंसिरुसहितसमाजा
रिषिआयसुअसीससिरराषी। करिदंडवतबिनयबहु भाषी
पथगतिकुसलसाथसबलीन्हे। चलेचित्रकूटहि चितु दीन्हे
रामसषाकर दीन्हे लागू। चलतदेहधरिजनु अनुरागू
नहिपदत्रानसीसनहिंछाया। पेमुनेमु ब्रतु धरमु अमाया
लषनुरामुसियपंथ कहानी। पूंछतसषहि कहत मृदुबानी
रामबासथल बिटपबिलोकें। उरअनुरागरहत नहि रोकें
देषिदसासुर बरिसहिंफूला। भइमृदुमहिमगु मंगलमूला

दोहा ॥ कियेंजाहिं छायाजलद सुषद बहइ बरबात ।
तस मगु भयेउ न रामकहं जसभा भरतहिंजात॥१६॥

जडचेतनमग जीव घनेरे। जेचितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे
ते सब भये परमपद जोगू। भरतदरस मेटा भवरोगू
येहबाडिबात भरत कइनाहीं। सुमिरतजिनहिंरामुमनमाहीं
बारकराम कहत जगजेऊ। होततरन तारन नर तेऊ
भरतुरामप्रियपुनिलघुभ्राता। कस न होइ मगु मंगलदाता
सिद्धसाधुमुनिबरअसकहहीं भरतहिंनिरषिहरषुहियलहहीं
देषि प्रभाउ सुरेसहि सोचू। जगुभलभलेहि पाचकहुंपोचू

गुरसनकहेउकरिअप्रभुसोई। रामहि भरतहि भेट न होई

दोहा ॥ रामुसंकोची प्रेमबस भरत सपेम पयोधि ।
बनीबात बिगरनचहति करिअजतनुछलुसोधि॥१७॥

बचनसुनतसुरगुरुमुसुकानें। सहसनयन बिनुलोचनजानें
मायापति सेवकसन माया। करइत उलटिपरइ सुरराया
तब किछुकीन्हरामरुषजानी। अबकुचालिकरि होइहिहानी
सुनुसुरेस रघुनाथ सुभाऊ। निजअपराधरिसाहिं न काऊ
जोअपराधु भगतकरकरई। रामरोष पावक सो जरई
लोकहुंबेद बिदितइतिहासा। येह महिमा जानहिं दुरबासा
भरतसरिस को रामसनेही। जगुजप राम रामु जप जेही

दोहा ॥ मनहुं न आनिअ अमरपति रघुबर भगतअकाजु।
अजसु लोक परलोकदुषदिनदिनसोकसमाजु१८

सुनुसुरेस उपदेसु हमारा। रामहिं सेवकु परमपिआरा
मानत सुष सेवक सेवकाई। सेवकबैर बैरु अधिकाई
जद्यपि सम नहि रागनरोषू। गहहिं न पाप पुनु गुन दोषू
करम प्रधान बिस्वकरिराषा। जोजसकरइसोतसफलुचाषा
तदपिकरहिंसमबिषमाबिहारा। भगतअभगतहृदयंअनुसारा
अगुन अलेपअमानएकरस। रामुसगुनभएभगत प्रेम बस
राम सदा सेवकरुचि राषी। बेद पुरान साधु सुर साषी
असजियजानि तजहुकुटिलाई। करहुभरतपदप्रीति सुहाई

दोहा ॥ राम भगत परहितनिरत परदुष दुषी दयाल ।
भगतासिरोमनि भरततेंजनिडरपहुसुरपाल॥१९॥

सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी। भरत राम आयसु अनुसारी
स्वारथबिबस बिकल तुम्हहोहू। भरतदोसु नहिं राउरमोहू

मुनि सुरबर सुर गुरबर बानी । भा प्रमोदु मन मिटी गलानी
बरषिं प्रसून हरषि सुरराऊ । लगे सराहन भरत सुभाऊ
एहिबिधि भरतचले मगजाहीं । दसा देषि मुनिसिद्धसिहाहीं
जबहिं रामुकहि लेहिं उसासा । उमगत पेम मनहुं चहुंपासा
द्रवहिंबचनसुनिकुलिसपषाना । पुरजनपेमुनजाइ बषाना
बीचबासकरिजमुनहिं आए । निरषिनीरुलोचन जलछाए

दोहा ॥ रघुबर बरन बिलोकि बर बारि समेत समाज ।
होतमगन बारिधिबिरह चढ़े बिबेक जहाज ॥२०॥

जमुनतीरतेहिदिनकरिबासू । भयेउसमयसमसबहिसुपासू
रातिहिं घाट घाटकी तरनीं । आईंअगनितजाहिं न बरनीं
प्रात पार भये एकहि षेवा । तोषे रामसषा कीं सेवा
चले नहाइ नदिहिसिर नाई । साथ निषादनाथदोउ भाई
आगें मुनिबर बाहन आछें । राजसमाजजाइ सबु पाछें
तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें । भूषन बसन बेष सुठि सादें
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा । सुमिरतलषनुसीय रघुनाथा
जहं जहं राम बास बिश्रामा । तहं तहं करहिं सप्रेमप्रनामा

दोहा ॥ मगबासी नरनारि सुनि धामकाम तजि धाइ ।
देषि सरूपसनेह सब मुदित जनमफलुपाइ ॥२१॥

कहहिं सपेम एकएक पाहीं । रामुलषनुसषिहोहिं कि नाहीं
बय बपु बरन रूपु सोइ आली । सीलुसनेहुसरिससम चाली
बेषु न सो सषि सीय न संगा । आगे अनी चली चतुरंगा
नहिप्रसंनमुष मानस षेदा । सषिसंदेहु होइएहि भेदा
तासुतरकतियगनमनमानी । कहहिंसकलतेहिसमनसयानी
तेहिसराहि बानी फुरिपूजी । बोलीमधुरबचन तिय दूजी

कहिसपेम सब कथाप्रसंगू। जेहि बिधि रामराजरसभंगू
भरतहिबहुरिसराहन लागी। सीलसनेह सुभाय सुभागी

दोहा॥ चलतपयादें षानफल पिता दीन्ह तजिराजु।
जातमनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु॥२२॥

भायप भगतिभरतआचरनू। कहतसुनत दुषदूषन हरनू
जोकिछुकहबथोरसषिसोई। रामबंधुअसकाहे न होई
हम सब सानुज भरतहिं देषें। भइन्ह धन्य जुबतीजन लेषें
सुनिगुन देषिदसापछिताहीं। कैकइ जननि जोगु सुतुनाहीं
कोउकहदूषनुरानिहिनाहिनं। बिधिसबुकीन्हहमहिजोदाहिन
कहंहम लोक बेदबिधिहीनी लघुतिय कुलकरतूतिमलीनी
बसहिंकुदेमकुगांवं कुबामा। कहं येह दरसु पुन्य परिनामा
अस अनंदु अचिरिजुप्रातिग्रामा। जनुमरुभूमिकलपतरुजामा
दोहा॥भरतदरसु देषत षुलेउ मग लोगन्ह कर भागु।
जनु सिंघलबासिन्ह भयेउ बिधिबस सुलभप्रयागु॥२३॥

निजगुनसाहितरामगुनगाथा। सुनतजाहिंसुमिरत रघुनाथा
तीरथमुनिआश्रम सुरधामा। निरषिनिमज्जहिंकरहिंप्रनामा
मनहींमन मागहिं बरुएहू। सीयरामपदपदुम सनेहू
मिलहिंकिरात कोल बनबासी। बैषानस बटु जती उदासी
करि प्रनामु पूंछहिं जेहि तेही। केहि बन लषनु रामु बैदेही
ते प्रभुसमाचार सब कहहीं। भरतहिदेषिजनमफलुलहहीं
जे जन कहहिं कुसल हम देषे। तेप्रिय रामलषन समलेषे
एहिबिधिबूझतसबहि सुबानीं। सुनत रामबनबास कहानी

दोहा॥ तेहिबासर बसिप्रातहीं चले सुमिरि रघुनाथ।
राम दरसकी लालसा भरत सरिस सब साथ॥२४॥

मंगल सगुनहोंहिसब काहू। फरकहिंसुषद बिलोचन बाहू
भरतहिसहितसमाजउछाहू। मिलिहहिंरामुमिटिहिदुषदाहू
करतमनोरथ जस जियजाकें। जांहि सनेहसुरासब छाकें
सिथिलअंगपगमगडगिडोलहिंबिह्वलबचनपेमबसबोलहिं
रामसषा तेहिसमय देषावा। सैलसिरोमनिसहज सुहावा
जासु समीप सरित पयतीरा। सीयसमेत बसहिं दोउ बीरा
देषिकरहिं सब दंडप्रनामा। कहिजयजानकिजीवन रामा
प्रेममगन अस राजसमाजू। जनु फिरिअवधचलेरघुराजू

दोहा ॥ भरतप्रेमु तेहि समय जस तस कहिसकइनसेषु।
कबिहिअगमजिमिब्रह्मसुषुअहममलिनजनेषु॥२८॥

सकलसनेहसिथिलरघुबरकें। गयेकोस दुइ दिनकर ढरकें
जलुथलुदेषिबसे निसि बीते। किन्ह गवनु रघुनाथ पिरीते
उहां रामु रजनी अवसेषा। जागें सीय सपन अस देषा
सहित समाज भरतजनुआए। नाथबियोग ताप तन ताए
सकलमलिनमन दीन दुषारीं। देषीं सासु आन अनुहारीं
सुनिसियसपन भरेजललोचन। भयेसोचबससोचबिमोचन
लषन सपन यह नीकनहोई। कठिनकुचाह सुनाइहिकोई
अस कहि बंधुसमेत नहाने। पूजि पुरारि साधु सनमाने

छंद ॥ सनमानि सुरमुनिबंदि बैठे उतरदिसिदेषत भये।
नभ धूरिषगमृगभूरिभागेबिकलप्रभुआश्रमगये॥
तुलसी उठे अवलोकि कारनुकाइचितसचकितरहे
सबसमाचार किरातकोलन्हिआइतेहिअवसरकहे॥

सोरठा॥सुनतसुमंगल बैन मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरदसरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥२९॥

बहुरि सोचबस भे सियरवनू। कारन कवन भरतआगमनू
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी
सोसुनिरामहिं भा अतिसोचू। इत पितुबच इत बंधुसंकोचू
भरतसुभाउसमुझिमनमाहीं।प्रभुचितहितथितिपावतनाहीं
समाधान तब भा येह जानें। भरतु कहे महुं साधु सयानें
लषनु लषेउ प्रभु हृदयंषभारू। कहतसमयसमनीतिबिचारू
बिनु पूछें कछु कहउं गोसाईं। सेवकुसमयं न ढीठु ढिठाईं
तुम्हसर्बग्यसिरोमनिस्वामी।आपनिसमुझिकहउंअनुगामी
दोहा॥नाथ सुहृद सुठि सरलचित सील सनेह निधान।
सबपर प्रीति प्रतीति जियं जानिअआपुसमान॥२७॥

बिषई जीव पाइ प्रभुताई। मूढ मोहबस होंहि जनाई
भरतु नीतिरत साधु सुजाना। प्रभुपद प्रेमु सकलजगुजाना
तेऊ आजु राजपदु पाई। चले धरममरजाद मेटाई
कुटिलकुबंधुकुअवसरुताकी। जानि रामं बनबास एकाकी
करि कुमंत्रुमन साजिसमाजू। आये करइ अकंटक राजू
कोटिप्रकार कलपि कुटिलाई। आये दलु बटोरिदोउ भाई
जौंजियंहोतिनकपटकुचाली।केहिसोहातिरथबाजिगजाली
भरतहि दोसु देइ को जाएं। जग बौराइ राजपदु पाएं
दोहा॥ससि गुर तियगामी नहुषु चढेउ भूमिसुरजान।
लोकबेद तें बिमुष भा अधम न बेनसमान॥२८॥

सहसबाहु सुरनाथु त्रिसंकू। केहि न राजमददीन्ह कलंकू
भरतकीन्हयहउचित उपाऊ। रिपु रिन रंच न राषबकाऊ
एक कीन्हि नहिंभरतभलाई। निदरे रामु जानि असहाई
समुझिपरिहिसोउआजुबिसेषी। समरसरोष रामसुषपेषी

एतना कहत नीतिरस भूला । रनरस बिटपपुलक मिसफूला
प्रभुपद बंदि सीसरज राषी । बोले सत्य सहज बलुभाषी
अनुचितनाथ न मानब मोरा । भरत हमहिं उपचारनथोरा
कहंलगि सहिअ रहिअ मनु मारें । नाथसाथ धनु हाथ हमारें

दोहा ॥ छत्रिजाति रघुकुल जनमु रामअनुग जगुजान ।
लातहुँ मारें चढति सिर नीच को धूरिसमान॥२९॥

उठिकरजोरि रजायसु मागा । मनहुं बीररससोवत जागा
बांधिजटासिरकसिकटिभाथा । साजिसरासनुसायकुहाथा
आजु रामसेवकजसु लेऊं । भरतहि समरसिषावनुदेऊं
रामनिरादर कर फलुपाई । सोवहुं समरसेज दोउभाई
आइ बना भलसकलसमाजू । प्रगटकरउंरिसपाछिलआजू
जिमिकरिनिकारिदलइमृगराजू । लेइ लपेटिलवा जिमिबाजू
तैसेंहि भरतहि सेनसमेता । सानुज निदरि निपातउं पेता
जौं सहाय कर संकरु आई । तौ मारउं रन रामदोहाई

दोहा ॥ अतिसरोष माषे लषनु लषि सुनि सपथप्रवान ।
सभयलोक सब लोकपतिचाहत भभरि भगान॥२०॥

जगु भयमगन गगनभइबानी । लषनबाहुबलु बिपुल बषानी
तात प्रतापप्रभाउ तुम्हारा । को कहिसकइ को जाननिहारा
अनुचितउचितकाजुकिछुहोऊ । समुझिकरिअ भलकहसबुकोऊ
सहसा करि पाछें पछिताहीं । कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं
सुनि सुरबचन लषन सकुचानें । राम सीय सादर सनमानें
कही तात तुम्ह नीति सुहाई । सब तें कठिनराजमदु भाई
जो अंचवत मातहिं नृप तेई । नाहिन साधुसभाजेहिसेई
सुनहु लषन भल भरतसरीसा । बिधिप्रपंच महंसुनानदीसा

दोहा ॥ भरतहि होइ न राजमदु बिधिहरि हरपदपाइ ।
कबहुं कि कांजीसीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ॥११॥

तिमिरुतरुनतरनिहिमकुगिलई।गगनुमगनमकुमेघहि मिलई
गोपद जल बूडहिं घटजोनी । सहज छमा बरु छाडइछोनी
मसकफूंक मकु मेरु उडाई । होइ न नृपमदु भरतहिभाई
लषन तुम्हार सपथपितुआना।सुचिसुबंधुनहिभरतसमाना
सगुनुषीरु अवगुनजलु ताता।मिलइ रचइ परपंचु बिधाता
भरतु हंस रविबंसतडागा ।जनमिकीन्हगुनदोषबिभागा
गहिगुनपयतजिअवगुनबारी।निजजसजगतकीन्हिउजिआरी
कहत भरतगुनसीलु सुभाऊ। पेमपयोधि मगन रघुराऊ

दोहा ॥ सुनि रघुबर बानी बिबुध देषि भरत पर हेतु ।
सकल सराहत राम सो प्रभुको कृपानिकेतु॥१२॥

जौंनहोतजगजनम भरतको । सकलधरमधुरधरनिधरतको
कबिकुलअगमभरतगुनगाथा।को जानइंतुम्हबिनुरघुनाथा
लषन रामसियसुनि सुरबानी। अतिसुपुलहेउनजाइबपानी
इहां भरतु सबसहितसहाए । मंदाकिनी पुनीत नहाए
सरितसमीप राषि सब लोगा ।मांगिमातुगुरसचिवनियोगा
चले भरतु जहं सियरघुराई । साथ निषादनाथु लघुभाई
समुझि मातुकरतब सकुचाहीं। करतकुतरककोटिमनमाहीं
रामुलषनुसियसुनि ममनाऊं।उठिजनिअनतजाहिंतजिठाऊं
दोहा ॥ मातुमतेंमहुंमानि मोहि जो कछु कहहिं सो थोर ।
अघअवगुनछमिआदरहिंसमुझिआपनीओर॥१३॥
जौंपरिहरहिंमलिन मनुजानी । जौं सनमानहिंसेवकुमानी
मोरें सरन रामहिंकी पनहीं।रामसुस्वामिदोसुसबजनहीं

जगजसभाजन चातक मीना । नेम पेम निजनिपुननबीना ।
अस मन गुनत चलेमग जाता। सकुचसनेहसिथिलसबगाता ।
फेरति मनहुं मातुकृत षोरी । चलत भगतिबलधीरजधोरी
जब समुझत रघुनाथसुभाऊ । तब पथ परत उताइलपाऊ
भरतदसा तेहि अवसर कैसी। जलप्रबाहंजलअलिगतिजैसी
देषिभरत कर सोचु सनेहू । भा निषाद तेहिसमयंबिदेहू

दोहा ॥ लगेहोन मंगल सगुन सुनिगुनि कहत निषादु ।
मिटिहि सोच होइहिहरषपुनिपरिनामबिषादु ॥३४॥

सेवकवचन सत्य सब जानें । आश्रमनिकट जाइ निअरानें
भरत दीष बन सैल समाजू । मुदित छुधितजनुपाइसुनाजू
इति भीति जनुप्रजा दुषारी । त्रिबिध तापपीडित ग्रहभारी
जाइ सुराज सुदेस सुषारी । होहिंभरतगतितेहिअनुहारी
रामबास बनसंपति भ्राजा । सुषी प्रजाजनुपाइ सुराजा
सचिव बिरागु बिबेकु नरेसू । बिपिनसुहावनपावन देसू
भट जमनियम सैलरजधानी । सांतिसुमति सुचिसुंदररानी
सकल अंग संपंन सुराऊ । रामचरनआश्रितचित चाऊ

दोहा॥जीति मोह महिपालु दल सहित बिबेक भुआलु ।
करत अकंटक राजु पुरं सुष संपदा सुकालु ॥३५॥

बनप्रदेस मुनिबास घनेरे । जनु पुर नगर गाउंगन षेरे
बिपुल बिचित्रबिहग मृगनाना । प्रजासमाजु नजाइ बषाना
षगहा करि हरि बाघ बराहा । देषिमहिष वृषसाजुसराहा
बयरु बिहाय चरहिं एक संगा। जहं तहं मनहुं सेन चतुरंगा
झरनाझरहिंमत्तगजगाजहिं। मनहुंनिसानबिबिधबिधिबाजहिं
चकचकोर चातक सुकपिकगन। कूजत मंजु मराल मुदितमन

आलिगन गावत नाचत मोरा।जनु सुराज मंगल चहुं ओरा
बेलि बिटप तृन सफलसफूला।सबुसमाजु मुद मंगल मूला

दोहा ॥ रामसैल सोभा निरषि भरतुहृदय अतिपेमु ।
तापस तपफलु पाइजिमि सुषी सिरानें नेमु ॥ २६ ॥

तब केवट ऊंचे चढिधाई । कहेउ भरतसन भुजा उठाई
नाथदेषिअहिं बिटपबिसाला।पाकरि जंबु रसाल तमाला
जिन्हतरुबरन्हमध्यबटुसोहा। मंजुबिसाल देषि मनुमोहा
नील सघनपल्लवफल लाला।अबिरल छांहसुषदसबकाला
मानहुंतिमिर अरुनमयरासी।बिरचीबिधिसंकेलिसुषमासी
ए तरु सरितसमीप गोसांई । रघुबर परनकुटी जहं छाई
तुलसी तरुबर बिबिध सुहाए।कहुंकहुंसियकहुंलषनलगाए
बटछायां बेदिका बनाई ।सियानिजपानिसरोज सुहाई

दोहा॥जहांबैठिमुनिगनसहित नित सिय रामु सुजान ।
सुनहिंकथा इतिहाससब आगमनिगम पुरान॥२७॥

सषाबचनसुनि बिटपनिहारी। उमगे भरत बिलोचन बारी
करत प्रनाम चले दोउ भाई। कहत प्रीति सारद सकुचाई
हरषहिंनिरषि राम पदअंका। मानहुं पारसु पायेउ रंका
रजसिरधरिहियंनयनन्हिलावहिं।रघुबरमिलनसरिससुषपावहिं
देषिभरतगति अकथ अतीवा। प्रेममगन मृगषग जडजीवा
सषहिं सनेहबिबस मग भूला । कहिसुपंथ सुरबरषहिं फूला
निरषिसिद्धसाधक अनुरागे ।सहजसनेहु सराहन लागे
होत न भूतल भाउ भरतको।अचरसचर चर अचर करतको

दोहा ॥ पेमु अमिअ मंदरु बिरहु भरतु पयोधिगंभीर।
मथि प्रगटेउसुरसाधुहितकृपासिंधु रघुबीर॥२८॥

सषासमेत मनोहर जोटा।लषेउ न लषन सघनबन ओटा
भरत दीष प्रभुआश्रमु पावन।सकल सुमंगल सदनु सुहावन
करत प्रबेस मिटे दुषदावा। जनु जोगी परमारथु पावा
देषे भरत लषन प्रभुआगें। पूंछे बचन कहत अनुरागे
सीस जटा कटि मुनिपटबांधें। तून कसें कर सरु धनु कांधें
बेदी पर मुनि साधु समाजू। सियसहित राजत रघुराजू
बलकलबसनजटिलतनुस्यामा।जनुमुनिबेष कीन्हरतिकामा
करकमलनि धनुसायकु फेरत।जियकी जरनिहरतहांसि हेरत

दोहा ॥ लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंदु।
ग्यानसभां जनु तनु धरे भगति सच्चिदानंदु ॥३९॥

सानुज सषा समेत मगनमन। बिसरे हरषसोकसुषदुषगन
पाहि नाथ कहिपाहि गोंसांई। भूतल परे लकुट की नांई
बचनसपेमलषनपहिचाने । करतप्रनामुभरत जियजाने
बंधुसनेह सरस एहिंओरां। इत साहिबसेवा बसजोरां
मिलिनजाइनहिगुदरतबनई। सुकबिलषनमनकीगति भनई
रहे राषि सेवा पर भारू । चढी चंग जनु षैंच षेलारू
कहत सप्रेम नाइ महिमाथा। भरत प्रनाम करत रघुनाथा
उठे रामु सुनि पेम अधीरा। कहुं पटकहुं निषंग धनु तीरा

दोहा ॥ बरबस लिए उठाइ उर लाये कृपानिधान।
भरत रामकी मिलनिलषिबिसरेसबहिंअपान॥४०॥

मिलनिप्रीतिकिमिजाइबषानी।कबिकुलअगमकरममनबानी
परमपेम पूरनदोउ भाई। मनबुधि चित अहमितिबिसराई
कहहु सुपेमु प्रगटको करई। केहिछायांकबिमतिअनुसरई
कबिहिंअरथआषर बलु सांचा।अनुहरितालगतिहिनटुनाचा

अगमसनेहु भरतरघुबर को। जहंनजाइमनुबिधिहरिहरको
सोमइकुमतिकहउं केहिभांती।बाजु सुराग कि गांडरतांती
मिलनिबिलोकिभरतरघुबरकी।सुरगनसभयधकधकीधरकी
समुझाये सुरगुरु जड जागे । बरषि प्रसून प्रसंसन लागे

दोहा ॥ मिलि सपेम रिपुसूदनहिं केवटु भेंटेउ राम ।
भूरिभायं भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम॥४१॥

भेंटेउलषनललकि लघुभाई । बहुरिनिषादुलीन्हउर लाई
पुनि मुनिगन दुहुं भाइन्हबंदे। अभिमतआसिषपाइअनंदे
सानुज भरत उमगि अनुरागा।धरिसिरसियपदपदुमपरागा
पुनिपुनि करत प्रनाम उठाए । सिर करकमलपरसिबैठाए
सीयं असीस दीन्हिमन माहीं । मगनसनेह देहसुधिनाहीं
सबबिधि सानुकूल लषि सीता। भे निसोचउरअपडरबीता
कोउकिछुकहइनकोउकिछुपूछा।प्रेमभरामन निजगतिछूछा
तेहिअवसरकेवटुधीरजु धरि ।जोरिपानिबिनवतप्रनामुकरि

दोहा ॥ नाथ साथ मुनिनाथ कें मातु सकल पुरलोग ।
सेवक सेनप सचिव सब आए बिकलबियोग ॥४२॥

सीलसिंधु सुनि गुरआगवनू। सियसमीप राषे रिपुदवनू
चलेसबेग रामु तेहि काला । धीर धरमधुर दीनदयाला
गुरहि देषि सानुज अनुरागे । दंडप्रनाम करनप्रभु लागे
मुनिबर धाइ लिए उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई
प्रेम पुलकिकेवट कहि नामू । कीन्ह दूरि तें दंडप्रनामू
रामसषारिषि बरबस भेंटा । जनुमहिलुठत सनेहु समेटा
रघुपति भगतिसुमंगल मूला।नभ सराहिसुरबरिसहिंफूला
एहिसमनिपटनीचकोउ नाहीं। बडबासिष्ठसमको जगमाहीं

दोहा ॥ जेहिंलषिलषनहुंतें अधिक मिलेमुदित मुनिराउ ।
सो सीतापतिभजन को प्रगट प्रतापप्रभाउ॥४३॥

आरतलोग रामसबु जाना । करुनाकर सुजान भगवाना
जोजेहिंभायं रहाअभिलाषी। तेहितेहिकैतसितसिरुषराषी
सानुजमिलिपलमहुंसबकाहू। कीन्हि दूरिदुषु दारुन दाहू
येहि बडि बातरामकै नाहीं। जिमिघटकोटि एकरबिछाहीं
मिलिकेवटहिउमगिअनुरागा।पुरजनसकलसराहहिं भागा
देषींराम दुषित महतारीं। जनुसुबेलिअवलीहिममारीं
प्रथम राम भेंटी कैकेई । सरलसुभायंभगतिमति भेई
पग परि कीन्हप्रबोधु बहोरी ।कालकरमबिधिसिरधरिषोरी

दोहा ॥ भेंटी रघुबर मातु सब करि प्रबोधु परितोषु ।
अंब ईसआधीन जगु काहु न देइअ दोषु ॥४४॥

गुरतिय पदबंदे दुहु भाई । सहित बिप्रतिय जे संग आईं
गंग गौरिसम सब सनमानीं।देहिंअसीस मुदित मृदुबानी
गहि पदलगे सुमित्राअंका । जनु भेंटी संपति अति रंका
पुनि जननीचरननिदोउभ्राता। परे पेम ब्याकुल सबगाता
अतिअनुराग अंब उर लाए। नयन सनेहसलिलअन्हवाए
तेहिअवसरकरहरषबिषादू।किमिकबिकहइमूकजिमिस्वादू
मिलिजननिहिसानुजरघुराऊ।गुरसन कहेउ किधारिअपाऊ
पुरजन पाइ मुनीसनियोगू।जल थलतकितकिउतरेउलोगू

दोहा ॥ महिसुर मंत्री मातु गुर गनें लोग लिएसाथ ।
पावन आश्रम गवनु किय भरत लषनरघुनाथ॥४५॥

सीयआइ मुनिबर पगलागी।उचित असीस लही मनमांगी
गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता।मिलीपेमु कहिजाइनजेता

बंदि बंदि पग सिय सबही के। आसिरबचनलहेप्रियजीके
सासुसकलजब सीय निहारीं। मूंदेनयन सहमि सुकुमारी
परी बधिकबस मनहुं मराली। काहकीन्ह करतारकुचाली
तिन्हसियनिरषिनिपटदुषपावा। सोसबसहिअजोदैउसहावा
जनकसुता तब उर धरि धीरा। नीलनलिनलोयनभरिनीरा
मिलीसकलसासुन्हसियजाई। तेहिअवसरकरुनामहिछाई

दोहा॥लागि लागि पग सबनि सियभेंटति अतिअनुराग।
हृदयं असीसहिं पेमबस रहिअहु भरी सोहाग॥४६॥

बिकलसनेह सीय सब रानीं। बैठनसबहिकहेउगुरग्यानी
कहिजगगतिमायिकमुनिनाथा। कहे कछुक परमारथगाथा
नृपकरसुरपुर गवनु सुनावा। सुनिरघुनाथदुसहदुषुपावा
मरनहेतु निजनेहु बिचारी। भेअतिबिकल धीरधुरधारी
कुलिसकठोरसुनत कटुबानी। बिलपनलषनसीयसबरानी
सोकबिकलअतिसकलसमाजू। मानहुं राजु अकाजेउआजू
मुनिबर बहुरि राम समुझाए। सहितसमाजसुसरितनहाए
ब्रतु निरंबुतेहिदिन प्रभु कीन्हा। मुनिहुंकहेजलुकाहुनलीन्हा

दोहा॥भोरु भयें रघुनंदनहि जो मुनि आयेसु दीन्ह।
श्रद्धा भगति समेत प्रभुसोसबु सादरु कीन्ह॥४७॥

करिपितुक्रिया बेद जसिबरनी। भे पुनीत पातक तमतरनी
जासु नाम पावक अघतूला। सुमिरतसकलसुमंगलमूला
सुद्धसोभयेउ साधु संमतअस। तीरथआवाहनसुरसरिजस
सुद्ध भएं दुइ बासर बीते। बोले गुर सन राम पिरीते
नाथ लोग सब निपटदुपारी। कंदमूल फल अंबु अहारी
सानुज भरतुसचिवसबमाता। देपिमोहिपलजिमिजुगजाता

सबसमेत पुर धारिअ पाऊ । आपु इहां अमरावतिराऊ
बहुत कहेउं सबकियेउंढिठाई । उचितहोइतसकरिअगोसांई
दोहा॥धर्मसेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम।
लोगदुषितादिनदुइदरस देषिलहहुं बिश्राम ॥ ४८ ॥
रामबचनसुनिसभयसमाजू।जनुजलनिधिमहुंबिकलजहाजू
सुनि गुरगिरा सु मंगलमूला। भयेउमनहुं मारुतअनुकूला
पावनपय तिहुं कालनहाहीं । जोबिलोकिअघओघनसाहीं
मंगलमूरति लोचनभरिभरि।निरषहिंहरषिदंडवतकरिकरि
राम सैल बन देषन जाहीं । जहंसुषसकलसकलदुषनाहीं
झरनाझरहिं सुधासम बारी। त्रिबिधतापहरात्रीबिधबयारी
बिटपबेलि तृन अगनितजाती।फल प्रसून पल्लव बहु भांती
सुन्दर सिला सुषद तरुछाहीं । जाइबरनिबनछबिकेहिपाहीं
दोहा ॥ सरनि सरोरुह जल बिहग कूजत गुंजत भृंग।
बैरबिगत बिहरत बिपिनमृग बिहंगबहुरंग॥४९॥
कोल किरात भिल्ल बनबासी । मधुसुचिसुंदर स्वादुसुधासी
भरिभरि परनपुटीं रचिरूरीं । कंद मूल फल अंकुर जूरीं
सबहिंदेहिंकरिबिनयप्रनामा । कहिकहिस्वादुभेद गुननामा
देहिंलोग बहुमोल न लेहीं । फेरत राम दोहाई देहीं
कहहिं सनेह मगन मृदुबानी । मानत साधु पेम पहिचानी
तुम्ह सुकृतीहमनीचनिषादा । पावा दरसनु राम प्रसादा
हमहिंअगमअतिदरसुतुम्हारा। जसमरुधरनिदेवधुनि धारा
रामकृपाल निषाद नेवाजा । परिजनप्रजउचहियजसराजा
दोहा ॥ येह जियं जानि संकोचुतजि करिअ छोहुलषिनेहु॥
हमहिं कृतारथ करनलगि फल तृन अंकुर लेहु॥५०॥
तुम्हप्रिय पाहुने बन पगुधारे । सेवाजोगु न भाग हमारे

देव काहहम तुम्हहि गोसांई। ईंधनु पात किरात मितांई
एहहमारि अतिबाडिसेवकाई। लेंहि न बासनबसनचोराई
हम जड जीव जीवगनघाती।कुटिलकुचालीकुमतिकुजाती
पापकरत निसिबासरजाहीं। नहिं पटकाटिनाहिपेटअघाहीं
सपनेंहुधरम बुद्धिकसकाऊ। येह रघुनंदन दरस प्रभाऊ
जब तें प्रभुपद पदुम निहारे। मिटे दुसहदुष दोष हमारे
बचनसुनत पुरजनअनुरागे। तिन्हके भागसराहन लागे
छंदु॥लागेसराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनिमिलनि सियराम चरन सनेहुलषिसुषुपावहीं॥
नरनारि निदरहिं नेहु निजमुनि कोल भिल्लनिकीगिरा।
तुलसी कृपा रघुबंसमनिकी लोहलैलोका तिरा॥
सोरठा॥बिहरहिंबनचहुं ओर प्रतिदिनप्रमुदितलोगसब।
जलज्यों दादुर मोरभये पीनपावसप्रथम॥९१॥
पुरजननारिमगनअति प्रीती। बासरजांहिपलकसम बीती
सीय सासु प्रति बेष बनाई। सादर करइसरिस सेवकाई
लषा न मरमु राम बिनु काहूं। माया सब सियमाया माहूं
सीयसासुसेवाबसकीन्हीं।तिन्हलहिसुषासिषआसिषदीन्हीं
लषिसियसहितसरलदोउभाई।कुटिलरानिपछितानिअघाई
अवनि जमहि जाचति कैकेई। महिनबीचुबिधिमीचु न देई
लोकहु बेद बिदितकबिकहहीं। रामबिमुपथलुनरकनलहहीं
यहु संसउ सब कें मनमाहीं।रामगंवनुबिधिअवधकिनाहीं
दोहा॥ निसिननीदनहिभूषदिन भरतुबिकलसुचि सोच।
नीचकीच बिच मगनजसमीनहिसलिलसंकोच॥९२॥
कीन्हमातुमिस काल कुचाली।ईतिभीति जस पाकतसाली
केहि बिधि होइ रामअभिषेकू।मोहिअवकलतउपाउ न एकू

अवसिफिरहिंगुरआयेसुमानीमुनिपुनिकहबरामरुचिजानी
मातु कहेहु बहुरहिं रघुराऊ। रामजनानिहठकराबिकिकाऊ
मोहिअनुचर करकेतिकबाता।तेहिमहंकुसमउबामबिधाता
जौंहठकरउं त निपट कुकरमू। हरगिरि तें गुरु सेवकधरमू
एकउ जुगुति नमन ठहरानी।मोचत भरतहि रैनिबिहानी
प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई। बैठत पठये रिषय बोलाई

दोहा॥गुरपदकमल प्रनामु करि बैठे आयसु पाइ।
बिप्र महाजन सचिव सब जुरेसभासदआइ॥९३॥

बोल मुनिबरु समयसमाना। सुनहुं सभासद भरतसुजाना
धरमधुरीन भानु कुल भानू। राजा रामु स्वबस भगवानू
सत्यसंध पालक श्रुतिसेतू। रामजनमु जग मंगलहेतू
गुर पितुमातु बचन अनुसारी। षलदलुदलन देवहितकारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु।कोउनरामसम जान जथारथु
बिधिहरिहरुसमिराबिदिसिपाला।मायाजीवकरमकुलिकाला
अहिपमहिप जहं लगिप्रभुनांई।जोग सिद्धि निगमागमगाई
करिबिचार जिय देषहु नीकें। रामरजाइ सीस सबही कें

दोहा॥राषें राम रजाइ रुष हम सब कर हित होइ।
समुझिसयानेकरहुअब सब मिलि संमत सोइ॥९४॥

सब कहुं सुषद रामअभिषेकू। मंगलमोद मूल मग एकू
केहिबिधिअवधचलहिंरघुराऊ।कहहुसमुझिसोइकरिअउपाऊ
सबसादर सुनिमुनिबरबानी। नय परमारथ स्वारथ सानी
उतरु न आव लोग भए भोरे। तब सिरुनाइ भरतकरजोरे
भानुबंस भये भूप घनेरे। अधिक एक तें एक बडेरे
जनम हेतु सब कहं पितुमाता।करम सुभासुभ देइ बिधाता

दलिहुषसजइसकल कल्याना ।अस असीस राउरि जगु जाना
सोइगोसांइबिधिगतिजेंहिछेकीं । सकइ कोटारिटेकजेोटेकीं
दोहा॥ बूझिअ मोहि उपाउ अबसो सब मोर अभागु ।
सुनि सनेह मय बचनगुर उरउमगा अनुरागु ॥९९॥
तात बात फुरि राम कृपाहीं॥रामबिमुष सिधि सपनेहुंनाहीं
सकुचउं तात कहत एक बाता। भे प्रमोद परिपूरन गाता
मन प्रसंन तन तेजु बिराजा ।जनु जियराउ रामुभएराजा
बहुतु लाभ लोगन्ह लघु हानी । समदुषसुषसब रोवहिंरानी
कहहिं भरतुमुनिकहासोकीन्हे । फलुजगजीवन्हअभिमतदीन्हे
कानन करउं जनम भरि बासू।एहि तें अधिक न मोरसुपासू
दोहा॥अंतरजामी रामुसिय तुम्ह सरबग्य सुजान ।
जौं फुर कहहुत नाथनिज कीजिअबचनुप्रवान॥९६॥
भरतबचन सुनि देषिसनेहू । सभासहित मुनिभये बिदेहू
भरत महा महिमा जलरासी।मुनिमतिठाढितीरअबलासी
गा चह पार जतनु हियं हेरा । पावति नाव न बोहितुबेरा
औरु करिहि को भरत बडाई । सरसीं सीपिकि सिंधुसमाई
भरतुमुनिहिं मन भीतर भाए । सहितसमाजरामपहिंआए
प्रभुप्रनामुकरिदीन्हसुआसनु ।बैठेसबसुनिमुनिअनुसासनु
बोले मुनिबरु बचन बिचारी ।देशकाल अवसर अनुहारी
सुनहुं राम सरबग्य सुजाना । धरमनीतिगुनग्याननिधाना
दोहा ॥ सबके उरअंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ ।
पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ॥९७॥
आरतकहहिंबिचारिन काऊ । सूझजुआरिहि आपुनदाऊ
सुनिमुनिबचन कहत रघुराऊ । नाथतुम्हारेंहि हाथ उपाऊ
सब कर हित रुष राउरि राखें । आयेसुकिएमुदितफुर भाषें

प्रथम जो आयसुमोकहुं होई । माथेमानिकरउं सिष सोई
पुनिजेहिकहंजसकहबगोसांईसोसबभांतिघटिहिसेवकाई
कहमुनिराममत्यतुम्ह भाषा । भरत सनेहबिचारु न राषा
तेहि तें कहउं बहोरि बहोरी।भरतभगतिबसभइमतिमोरी
मोरें जान भरतरुचि राषी । जोकीजिअसो सुभसिवसाषी
दोहा ॥ भरतबिनय सादर सुनिअ करिअबिचारु बहोरि ।
करबसाधुमतलोकमत नृपनयनिगमनिचोरि॥९८॥
गुरअनुरागुभरत पर देषी । रामहृदयं आनंदु बिसेषी
भरतहि धरमधुरंधर जानी । निजसेवकतनमानस बानी
बोले गुर आयस अनुकूला । बचन मंजु मृदु मंगलमूला
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई ।भएउनभुअनभरतसमभाई
जे गुरपद अंबुज अनुरागी । ते लोकहुं बेदहुं बडभागी
राउर जा पर अस अनुरागू । कोकहिसकइभरतकरभागू
लषि लघुबंधु बुद्धि सकुचाई । करतबदन पर भरतबडाई
भरतु कहहिंसोइ किएंभलाई । असकहिराम रहे अरगाई
दोहा ॥ तब मुनि बोले भरत सन सब संकोचुतजि तात ।
कृपासिंधु प्रियबंधु सन कहहुहृदयंकै बात ॥ ९९॥
मुनिमुनिबचन रामरुष पाई । गुरु साहिब अनुकूलअघाई
लषिअपनेंसिरसबुछरुभारू कहिनसकहिंकछुकरहिबिचारू
पुलकि सरीर सभां भएठाढे । नीरजनयन नेहजल बाढे
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा । एहितेंअधिककहौं मै काहा
मैं जानउं निजनाथ सुभाऊ । अपराधिहुपर कोहन काऊ
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी । षेलतषुनिस न कबहूं देषी
सिसुपन तें परिहरेउं न संगू । कबहुं न कीन्हमोरमनभंगू
मै प्रभु कृपारीति जियं जोही । हारेहु षेल जितावहिंमोही

दोहा ॥ महूं सनेह सकोच बस सनमुष कही न बयन ।
दरसन तृपित न आजुलगिपेमपिआसेनयन॥६०॥
बिधिनसकेउ सहिमोर दुलारा।नीचंबीचु जननी मिस पारा।
यहउकहतमोहिंआजुनसोभा।अपनीसमुझिसाधुसुचिकोभा
मातु मंद मइं साधु सुचाली।उर अस आनतकोटिकुचाली
फरइ कि कोदव बालिसुसाली। मुकताप्रसवकिसंबुककाली
सपनेहुं दोस कलेसु न काहू। मोर अभाग उदधिअवगाहू
बिनु समुझेंनिजअघपरिपाकू।जारिउंजायंजननिकहिकाकू
हृदयं हेरिहारउं सब ओरां। एकहिभांतिभलेंहिभलमोरां
गुरुगोसांइसाहिबसियरामू। लागत मोहि नीक परिनामू
दोहा॥ साधुसभांगुरप्रभुनिकट कहउं सुथल सतिभाउ।
प्रेमप्रपंचु कि झूठ फुर जानाहिंमुनि रघुराउ ॥६१॥
भूपतिमरन पेम पनु राषी। जननीकुमतिजगतुसबु साषी
देषि नजांहि बिकलमहतारीं। जरहिंदुसह जरपुर नर नारीं
महींसकलअनरथकरमूला। सोसुनिसमुझिसहिउंसबसूला
सुनि बनगवनुकीन्हरघुनाथा। करिमुनिबेषलषनासियसाथा
बिनु पानहिन्हपयादेहि पाएं।संकरुसाषिरहेउं एहि घाएं
बहुरि निहारि निषादसनेहू।कुलिसकठिनउरभएउ न बेहू
अबसबुआंषिन्हदेषेउं आई। जिअतजीवजडसबइ सहाई
जिन्हहिंनिरषिमगसांपिनिबीछीं। तजहिं बिषमबिषु तामसतीछीं
दोहा॥तेइ रघुनंदनु लषनु सिय अनहित लागे जाहि।
तासु तनयतजिदुसह दुष दैउ सहावइ काहि ॥ ६२॥
सुनिअतिबिकलभरतबरबानीआरतिप्रीतिबिनयनयसानी
सोकमगनसबसभाषभारू। मनहुं कमलबनपरेउतुसारू
कहिअनेकबिधि कथा पुरानी। भरतप्रबोधुकीन्हमुनिग्यानी

बोले उचित बचन रघुनंदू। दिनकरकुल कैरव बनचंदू
तातजायं जियकरहु गलानी। ईसअधीन जीवगति जानी
तीनिकाल तिभुअनमतमोरें। पुन्यसिलोक तात तरतोरे
उरआनत तुम्हपर कुटिलाई;। जाइ लोकु परलोकुनसाई
दोसु देहिंजननिहि जड तेई। जिन्हगुर साधुसभानहिसेई

दोहा॥ मिटिहहिं पापँप्रपंच सबअषिलअमंगल भार।
लोकसुजंसुपरलोकसुषुसुमिरत नामुतुम्हार॥६३॥

कहउंसुभाउसत्य सिवसाषी। भरतभूमिरहराउरि राषी
तातकुनरक करहु जनि जांएं। बैर पेमु नहि दुरइदुराएं
मुनिगननिकटबिहगमृगजाहीं। बाधकबधिकबिलोकिपराहीं
हितअनहित पसुपच्छिउजाना। मानुषतनुगुनग्याननिधाना
तातुतुम्हहिंमइं जानउं नीकें। करउं काहअसमंजसजीकें
राषेउ रायं सत्य मोहि त्यागी। तनु परिहरेउपेमपनुलागी
तासु बचन मेंटत मन सोचू। तेहितेंअधिकतुम्हारसंकोचू
तापरगुरमोहिआयसुदीन्हा अवसिजोकहहुचहउंसोइकीन्हा

दोहा॥ मनु प्रसंन करि सकुच तजि कहहु करउंसोइआजु।
सत्यसंध रघुबर बचन सुनि भा सुषी समाजु॥६४॥

सुर गन सहित सभयसुरराजू। सोचहिंचाहत होनअकाजू
बनत उपाउ करत कछु नाहीं। रामसरन सब गे मन माहीं
बहुरिबिचारिपरसपरकहहीं। रघुपतिभगतभगतिबसअहहीं
सुधि करि अंबरीष दुरबासा। भे सुरसुरपति निपटनिरासा
सहे सुरन्ह बहुकाल बिषादा। नरहरि किए प्रकट प्रहलादा
लगिलगिकान कहहिंधुनिमाथा। अबसुरकाजभरतकेहाथा
आनउपाउ न देषिअदेवा। मानत रामु सुसेवक सेवा

आन उपाउ न देषिअ देवा। मानत रामु सुसेवक सेवा।
हियसपेम सुमिरहुसब भरतहिनिजगुनसीलरामबसकरतहि

दोहा॥सुनि सुरमत सुरगुर कहेउ भलतुम्हार बड भागु।
सकल सुमंगलमूल जग भरतचरन अनुरागु ॥६१॥

सीतापतिसेवक सेवकाई। काम धेनुसयसरिस सुहाई
भरतभगतितुम्हरेंमनआई।तजहुसोचुबिधिबात बनाई
देषु देवपति भरत प्रभाऊ। सहजसुभायबिबस रघुराऊ
मनथिरकरहुदेवडरु नाहीं। भरतहिं जानि रामपरिछाहीं
सुनिसुरगुरसुरसंमतसोचू। अंतरजामी प्रभुहि सकोचू
निजसिरभारुभरतजियंजाना।करतकोटिबिधिउरअनुमाना
करिबिचारुमन दीन्हींठीका। रामरजायस आपन नीका
निजपनतजिरापेउपनुमोरा। छोहुसनेह कीन्ह नहि थोरा

दोहा॥ कीन्ह अनुग्रह अमितअति सबबिधि सीतानाथ।
करिप्रनामु बोलेभरतु जोरिजलजजुगहाथ॥६६॥

कहउंकहावउं का अबस्वामी। कृपाअंबुनिधि अंतरजामी
गुरप्रसंन साहिब अनुकूला। मिटीमलिनमनकलपितसूला
अपडर डरेउं न सोच समूलें। रबिहिनदोसुदेवदिसि भूलें
मोर अभागु मातु कुटिलाई।बिधिगतिबिषमकालकठिनाई
पाउरोपिसबमिलिमोहिघाला। प्रनतपाल पन आपन पाला
येहनइरीति न राउरिहोई। लोकहुं बेद बिदित नहि गोई
जगुअनभल भल एकुगोसांई।कहिअहोइभलकासुभलाई
देउदेवतरु सरिस सुभाऊ। सनमुषबिमुषनकाहुहिकाऊ
दोहा॥ जाइनिकट पहिचानितरु छांह समनिसबसोच।
मागत अभिमतपाव जग राउ रंकु भलपोच॥६७॥

लषिसबबिधिगुरस्वामिसनेहू । मिटेउछोभुनहि मन संदेहू
अबकरुनाकर कीजिअ सोई । जनहितप्रभुचितछोभुनहोई
जो सेवकु साहिबहिसंकोची।निजहितचहइतासुमतिपोची
सेवकहित साहिब सेवकाई । करइसकलसुषलोभ बिहाई
स्वारथुनाथ फिरेंसबहीका । किएंरजाइकोटि बिधि नीका
येह स्वारथ परमारथ सारू ।सकलमुकृतफलसुगतिसिंगारू
देव एक बिनतीसुनिमोरी । उचित होइ तसकरबबहोरी
तिलकसमाजुसाजिसबुआना।करिअसुफलप्रभुजौंमनुमाना

दोहा ॥सानुज पठइअ मोहिबन कीजिअसबहिसनाथ ।
नतरुफेरिअहिंबंधुदोउ नाथ चलउं मैं साथ॥६८॥

नतरुजांहि बन तीनिउभाई । बहुरिअसीयसहित रघुराई
जेहिबिधिप्रभुप्रसंनमनहोई । करुनासागर कीजिअ सोई
देवंदीन्हसबु मोहिअ भारू । मोरेंनीतिन धरम बिचारू
कहउंबचन सब स्वारथहेतू । रहतन आरतकेंचित चेतू
उतरुदेइ सुनिस्वामिरजाई । सो सेवकुलषिलाज लजाई
असमैअवगुनउदधि अगाधू । स्वामिसनेहंसराहत साधू
अबकृपालमोहिसोमत भावा । सकुचस्वामिमनजाइनपावा
प्रभुपदसपथकहउंसतिभाऊ । जगमंगलहित एक उपाऊ

दोहा ॥ प्रभुप्रसंनमन सकुचताजि जोजेहिआयसुदेब ।
सोसिरधरिधरिकरिहिसबु मिटिहिअनटअवरेब॥६९॥

भरतबचनसुचिसुनिसुरहरषे । साधुसराहिसुमन सुरबरषे
असमंजसबसअवध निवासी । प्रमुदितमनतापसबनबासी
चुपहिंरहे रघुनाथ संकोची । प्रभुगतिदेषिसभासपसोची
जनकदूततेहि अवसर आए । मुनिबसिष्ठसुनिबेगिबोलाए

करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । बेषु देषिभए निपटदुषारे
दूतन्ह मुनिबर बूझीं बाता ।कहहु बिदेहभूप कुसलाता
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा। बोले चरबर जोरें हाथा
बूझब राउर सादर साईं ।कुसलहेतुसोभएउगोसाईं
दोहा ॥ नाहि त कोसलनाथ कें साथ कुसल गइ नाथ ।
मिथिलाअवधबिसेषतें जगु सबु भयेउ अनाथ॥७०॥

कोसलपति गतिसुनि जनकौरा।भे सब लोक सोकबसबौरा
जेंहिदेषे तेंहि समय बिदेहू ।नामु सत्य अस लागनकेहू
रानिकुचालिसुनतनरपालहि।सूझनकछुजसमनि।बिनुब्यालहि
भरतराज रघुबर बनबासू । भामिथिलेसहिहृदयहरासू
नृप बूझे बुध सचिव समाजू ।कहहुबिचारिउचितकाआजू
समुझिअवधअसमंजसदोऊ।चलिअकिरहिअनकहकछुकोऊ
नृपहिं धीर धरि हृदय बिचारी।पठए अवध चतुर चरचारी
बूझि भरत सतिभाउ कुभाऊ।आएहु बेगि न होइ लषाऊं

दोहा॥ गयेअवध चर भरतगति बूझि देषि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरतु चार चले तेरहूति ॥ ७१ ॥

दूतन्ह आइ भरत कइ करनी ।जनकसमाज जथामतिबरनी
मुनिगुरपरिजनसचिवमहीपति।भे सबसोचसनेहबिकलअति
धरि धीरजु करि भरत बडाई । लिए सुभट साहनीबोलाई
घर पुर देस राषि रषवारे । हय गय रथ बहु जान संवारे
दुघरी साधि चले ततकाला।किए बिश्रामु न मग महिपाला
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा ।चले जमुन उतरन सबुलागा
षबरिलेन हम पठए नाथा।तिन्हकहिअसमहिनाएउमाथा
साथकिरात छसातक दीन्हे ।मुनिबरतुरतबिदा चर कीन्हे

दोहा ॥ सुनत जनकआगवनु सबु हरषेउ अवधसमाजु ।
रघुनंदनहि सकोचु बड सोचबिबस सुरराजु॥७२॥

गरइगलानि कुटिल कैकेई । काहि कहइ केहि दूषनुदेई
अस मन आनि मुदित नरनारी।भयेउ बहोरिरहबादिनचारी
एहि प्रकार गतबासर सोऊ ।प्रात नहान लाग सबु कोऊ
करि मज्जनु पूजहिं नरनारी ।गनप गौरितिपुरारि तमारी
रमारमन पद बंदि बहोरी । बिनवहिंअंजुलिअंचलजोरी
राजारामु जानकी रानी । आनंदअवधिअवधरजधानी
सुबसबसउफिरिसहितसमाजा।भरतहिरामुकरहुंजुबराजा
एहि सुखसुधा सींचि सब काहू । देव देहु जग जीवनलाहू

दोहा ॥ गुरुसमाज भाइन्ह सहित रामराजु पुर होउ ।
अछत रामराजा अवध मरिअ माग सबु कोउ॥७३॥

सुनिसनेहमय पुरजन बानी।निंदहि जोग बिरतिमुनिग्यानी
एहिबिधिनित्यकरमकरिपुरजन।रामहिंकरहिंप्रनामपुलकितन
ऊंच नीच मध्यम नर नारी।लहहिंदरसु निजनिजअनुहारी
सावधान सबहीं सनमानहि।सकलसराहत कृपानिधानहि
लरिकाइहि तें रघुबर बानी ।पालतनीति प्रीति पहिचानी
सील सकोचसिंधु रघुराऊ । सुमुखसुलोचनसरलसुभाऊ
कहत राम गुनगन अनुरागे ।सबनिजभाग सराहन लागे
हम सम पुन्यपुंज जग थोरे । जिन्हहिं रामु जानतकरिमोरे

दोहा ॥ प्रेममगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु।
सहितसभा संभ्रम उठेउ रबिकुलकमलदिनेसु॥७४॥

भाइ सचिव गुर पुरजन साथा ।आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा
गिरिबरुदीख जनकपति जबहीं।करि प्रनामु रथत्यागेउतबहीं

रामदरसु लालसा उछाहू । पथश्रम लेसु कलेसु न काहू
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही। बिनु मन तन दुखसुखसुधिकेही
आवत जनकु चले एहि भांती।सहितसमाजप्रेममतिमांती
आए निकट देषि अनुरागे ।सादर मिलन परसपरलागे
लगे जनक मुनिजन पदबंदन।रिषिन्ह प्रनामुकीन्हरघुनंदन
भाइन्हसहितरामु मिलिराजहि।चले लवाइसमेतसमाजहि

दोहा॥आश्रम सागर सांतरस पूरन पावन पाथु ।
सेन मनहुं करुनासरित लिएं जाहिं रघुनाथु ॥७५॥

बोरति ग्यान बिराग करारें । बचनससोक मिलत नदनारे
सोच उसास समीरतरंगा । धीरज तट तरुबर कर भंगा
बिषम बिषाद तोरावति धारा।भय भ्रम भवंर अवर्तअपारा
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा ।सकहिं न षेइ ऐक नहिंआवा
बनचर कोल किरात बिचारे ।थके बिलोकि पथिकहियंहारे
आश्रम उदधि मिली जब जाई।मनहुंउठेउ अंबुधि अकुलाई
सोक बिकलदोउ राज समाजा।रहा न ग्यानुनधीरजुलाजा
भूप रूप गुन सील सराही ।रोवहिं सोकसिंधु अवगाही

छंद॥अवगाहि सोचसमुद्र सोचहिं नारिनरब्याकुलमहा।
दैदोष सकल सरोष बोलहिं बाम बिधिकीन्होकहा॥
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देषि दसा बिदेहकी।
तुलसी न समरथु कोउजोतरिसकै सरित सनेहकी॥

सोरठा॥किए अमित उपदेस जहं तहं लोगन्ह मुनिबरन्ह।
धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठबिदेहसन ॥७६॥

जासुग्यानुरबिभवनिसिनासा। बचनकिरनमुनिकमलबिकासा
तेहि कि मोह ममता निअराई।यह सिय राम सनेह बड़ाई

बिषई साधक सिद्ध सयाने ।त्रिबिध जीव जग बेदबषाने
राम सनेह सरस मन जासू ।साधुसभां बड आदर तासू
सोह न रामपेम बिनु ग्यानू।करनधारबिनु जिमिजलजानू
मुनिबहुबिधि बिदेह समुझाए। रामघाट सब लोग नहाए
सकल सोकसंकुल नरनारी । सो बासरु बीतेउबिनुबारी
पसु षगमृगन्हनकीन्ह अहारू।प्रिय परिजन कर कौनबिचारू

दोहा ॥ दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहानें प्रात ।
बैठेंसब बट बिटप तर मन मलीन कृसगात॥७७॥

जे महिसुर दसरथपुर बासी। जेमिथिलापतिनगर निवासी
हंसबंसगुर जनकपुरोधा । जिन्हजगमगु परमारथुसोधा
लगे कहन उपदेस अनेका ।सहित धरमनयबिरतिबिबेका
कौसिककहिकहिकथापुरानी। समुझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथकौसिकहि कहेऊ। नाथ कालिजलबिनुसबुरहेऊ
मुनि कह उचित कहत रघुराई।गयेउ बीति दिन पहरअढाई
रिषिरुषलषिकहतिरहुतिराजू।इहांउचितनहिअसनअनाजू
कहा भूपभल सबहिं सुहाना। पाइ रजायसु चले नहाना

दोहा ॥ तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।
लइ आये बनचर बिपुल भरि भरि कांवरिभार॥७८॥

कामद भे गिरि रामप्रसादा । अवलोकत अपहरत बिषादा
सर सरिताबनभूमि बिभागा।जनु उमगति आनद अनुरागा
बेलिबिटपसब सफलसफूला। बोलतषगमृगआलिअनुकूला
तेहिअबसर बनअधिकउछाहू।त्रिबिध समीरसुषदसबकाहू
जाइ न बरनि मनोहरताई । राम जनक मुनिआयसुपाई
देषिदेषि तरुबर अनुरागे । जहं तहं पुरजन उतरनलागे
दल फल मूल कंद बिधि नाना। पावन सुंदर सुधासमाना

दोहा॥सादर सब कहँ रामगुर पठए भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करनफलहार॥७९॥

एहि बिधि बासर बीते चारी।रामु निरषि नरनारि सुषारी
दुहुंसमाजअसिरुचिमनमाहीं॥बिनुसियरामफिरबभलनाहीं
सीताराम संग बनबासू। कोटि अमरपुरसरिससुपासू
परिहरि लषन राम बैदेही।जेहि घरु भावबामबिधितेही
दाहिन दइउ होइ जब सबहीं॥रामसमीप बसिअबनतबहीं
मंदाकिनिमज्जनु तिहुंकाला॥ रामदरसु मुद मंगल माला
अटनुरामगिरिबनतापसथल।असनुअमिअरामकंदमूलफल
सुषसमेत संबत दुइ साता।पलसम होंहिनजानिअहिंजाता

दोहा॥एहिसुषजोगन लोग सब कहहिंकहांअसभागु।
सहज सुभायं समाज दुहुं राम चरन अनुरागु॥८०॥

एहिबिधिसकल मनोरथ करहीं।बचन सप्रेमसुनतमनहरहीं
सीयमातु तेहि समयं पठाईं। दासीं देषिसुअवसरु आईं
सावकास सुनि सब सियसासू। आयेउजनकराज रनिवासू
कौसल्यां सादर सनमानी।आसन दियेसमयसमआनी
सीलु सनेहु सकल दुहुं ओरा।द्रवहिंदेषिसुनिकुलिसकठोरा
पुलकसिथिलतनुबारिबिलोचन।महिनषलिषनलगींसबसोचन
सबसियरामप्रीतिकिसीमूरति।जनु करुनाबहुबेषबिसूरति
सीयमातु कह बिधिबुधि बांकी।जो पयफेनु फोर पबिटांकी

दोहा॥सुनिअ सुधा देषिअहिंगरल सब करतूति कराल।
जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल॥८१॥

सुनिससोचकहदेबिसुमित्रा॥बिधिगतिबडिबिपरीतबिचित्रा
जो सृजि पालइ हरइ बहोरी।बालकेलि समबिधिमति भोरी

कौसल्या कह दोसु न काहू ।करमबिबसदुषसुष छति लाहू
कठिनकरमगतिजानाबिधाता। जोसुभअसुभसकलफलदाता
ईस रजाइ सीस सबही के ।उतपतिथितिलयाबिषहुअमीके
देबि मोहबस सोचिअ बादी।।बिधिप्रपंचुअसअचलअनादी
भूपतिजियबमरबउरआनी।सोचिअसषिलषिनिजहितहानी
सीयमातु कह सत्य सुबानी ।सुकृतीअवधिअवधपतिरानी

दोहा।।लषनु रामु सिय जाहु बन भल परिनाम न पोचु ।
गहबरि हिय कह कौसिला मोहि भरत कर सोचु।।८२।।

ईसप्रसाद असीस तुम्हारी। सुत सुतबधूं देवसरि बारी
रामसपथ मै कीन्हि न काऊ ।सो करि कहौंसषी साति भाऊ
भरत सील गुन बिनय बड़ाई।भायपभगति भरोस भलाई
कहत सारदहु कर मति हीचे।सागर सीप कि जांहिउलीचे
जानउं सदा भरत कुलदीपा ।बार बार मोहि कहेउमहीपा
कसें कनकु मनि पारिषि पाएं।पुरुषपरिषिअहिंसमयसुभाएं
अनुचितआजुकहबअस मोरा। सोक सनेह सयानप थोरा
सुनिसुरसरि समपावनि बानीं।भईं सनेह बिकल सब रानीं

दोहा।।कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देबि मिथिलेसि ।
को बिबेकनिधिबल्लभहितुम्हहिसकइउपदेसि।।८३।।

रानि रायसन अवसरु पाई । अपनी भांति कहब समुझाई
रषिअहिंलषनु भरतुगवनहिंबन। जौंयेहमतमानइमहीपमन
तौभलजतनुकरब सुबिचारी। मोरेंसोचु भरत कर भारी
गूढसनेह भरत मन माहीं । रहें नीक मोहि लागत नाहीं
लषि सुभाउसुनिसरल सुबानी।सब भईं मगन करुनरसरानी
नभ प्रसून झरि धन्यधन्यधुनि। सिथिलसनेह सिद्धु जोगीमुनि

सबु रनिवासु बिथकि लषि रहेऊ। तब धरि धीर सुमित्रां कहेऊ
देबि दंड जुग जामिनि बीती। राममातु सुनि उठी सप्रीती
दोहा ॥ बेगि पाउ धारिअ थलहि कह सनेह सतिभायं।
हमरें तव अब ईसगति कै मिथिलेस सहाय॥८४॥
लषि सनेहु सुनि बचन बिनीता। जनकप्रिया गह पाय पुनीता
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी। दशरथ घरिनि राम महतारी
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं। अगिनि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं
सेवकु राउ करम मन बानी। सदा सहाय महेसु भवानी
रउरे अंग जोगु जग को है। दीप सहाय कि दिनकर सोहै
रामु जाइ बनु करि सुरकाजू। अचल अवधपुर करिहहिं राजू
अमर नाग नर राम बाहु बल। सुष बसिहहिं अपने अपने थल
येह सब जागबलिक कहि राषा। देबि न होइ मुधा मुनि भाषा
दोहा॥ अस कहि पग परि पेम अति सिय हित बिनय सुनाइ।
सिय समेत सियमातु तब चली सुआयसु पाइ॥८५॥
प्रियपरिजनहि मिली बैदेही। जो जेहि जोगु भांति तेहि तेही
तापसबेष जानकी देषी। भा सबु बिकल बिषाद बिसेषी
जनक रामगुर आयसु पाई। चले थलहिं सिय देषी आई
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी। पाहुनि पावन पेम प्रान की
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू। भयेउ भूप मनु मनहुं पयागू
सियसनेह बटु बाढत जोहा। ता पर राम पेम सिसु सोहा
चिरजीवी मुनि ग्यान बिकल जनु। बूडत लहेउ बाल अवलंबनु
मोह मगन मति नहिं बिदेह की। महिमा सिय रघुबर सनेह की
दोहा॥ सिय पितु मातु सनेह बस बिकल न सकी संभारि।
धरनिसुता धीरजु धरेउ समउ सुधरमु बिचारि॥८६॥
तापसबेष जनक सिय देषी। भयेउ पेमु परितोषु बिसेषी

पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ। सुजसधवलजगुकहसबुकोऊ
जिति सुरसरिकीरतिसरितोरी। गवनुकीन्हबिधिअंडकरोरी
गंग अवनिथल तीनि बडेरे। येंहि किये साधुसमाजघनेरे
पितु कह सत्य सनेह सुबानी। सीयसकुचिमहुमनहुंसमानी
पुनि पितु मातुलीन्हिउरलाई। सिषआसिषहितदीन्हिसुहाई
कहति न सीयसकुचिमनमाहीं। इहांबसब रजनी भलनाहीं
लषि रुष रानि जनायेउ राऊ। हृदयं सराहत सीलु सुभाऊ

दोहा॥ बारबार मिलि भेंट सिय बिदा कीन्हि सनमानि।
कही समय सिर भरतगति रानि सुबानि सयानि॥८७॥

सुनि भूपाल भरत व्यवहारू। मोन सुगंध सुधा ससिसारू
मूंदे सजल नयन पुलके तन। सुजसुसराहनलगेमुदितमन
सावधानसुनुसुमुषिसुलोचनि। भरतकथाभवबंधबिमोचनि
धरम राजनय ब्रह्मबिचारू। इहां जथामति मोर प्रचारू
सोमतिमोरिभरत महिमाहीं। कहइकाहछलिछुअनिनछाहीं
बिधिगनपतिअहिपतिसिवसारदकबिकोबिदबुधबुद्धिबिसारद
भरत चारितकीरति करतूती। धरमसीलगुनबिमलबिभूती
समुझतसुनतसुषदसबकाहू। सुचिसुरसरिरुचिनिदरसुधाहू
दोहा॥ निरवधि गुननिरुपम पुरुषु भरतु भरतसम जानि॥
कहिअ सुमेरु कि सेरसम कबिकुलमतिसकुचानि॥८८॥
अगम सबहिबरनतबरबरनी। जिमिजलहीनमीनगमुधरनी
भरत अमितमहिमासुनुरानी। जानहिंरामुनसकहिंबषानी
बरनि सप्रेमभरत अनुभाऊ। तियजियकीरुचिलषिकहराऊ
बरनहिं लषनु भरतुबनजाहीं। सबकरभलसबकेमनमाहीं
देषि परंतु भरतु रघुबरकी। प्रीति प्रतीति जाइनहिं तरकी

भरतुअवधिसनेह ममताकी। जद्यपि रामु सीय समताकी
परमारथ स्वारथसुष सारे ! भरत न सपनेहुं मनहुं निहारे
साधनसिद्धि रामपग नेहू। मोहिलषिपरतभरतमतएहू

दोहा॥ भोरेहुंभरतन पेलिहहिं मनसहुं रामरजाइ ।
करिअ न सोचुसनेहबस कहेउ भूप बिलषाइ ॥८९॥

रामभरतगुन गनत सप्रीती। निसिदंपतिहिपलकसमबीती
राजसमाज प्रात जुग जागे। न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे
गे नहाइ गुरु पहिं रघुराई। बंदि चरन बोले रुष पाई
नाथ भरतु पुरजन महतारीं। सोकबिकल बनबास दुषारीं
सहितसमाज राउ मिथिलेसू। बहुत दिवस भयेसहतकलेसू
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सबहीं कर रौरें हाथा
अस कहि अतिसकुचे रघुराऊ। मुनिपुलकेलषि सीलुसुभाऊ
तुम्ह बिनुरामसकलसुषसाजा। नरकसरिसदुहुं राजसमाजा
दोहा॥ प्रान प्रान के जीव के जिव सुष के सुष राम।
तुम्हतजितातसुहातगृहजिन्हहिंतिन्हहिंबिधिबाम॥९०॥

सो सुषु करमु धरमु जरिजाऊ। जहं न रामपदपंकज भाऊ
जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानू। जहं नहिं रामपेम परधानू
तुम्ह बिनुदुषी सुषी तुम्ह तेहीं। तुम्हजानहुंजिअंजोजेहिंकहीं
राउर आयसु सिर सबही कें। बिदित कृपालहिंगतिसबनीके
आपु आश्रमहिं धारिअं पाऊ। भयेउसनेहसिथिलमुनिराऊ
करि प्रनामु तब रामु सिधाये। मोल सनेह सुभायं सुहाए
महाराज अब कीजिअ सोई सब कर धरमसहितहितहोई
दोहा॥ ग्याननिधान सुजान सुचि धरमधीर नरपाल।
तुम्ह बिनु असमंजससमन को समरथ एहिकाल॥९१॥

सुनि मुनिबचनजनकअनुरागे।लषिगतिग्यानुबिरागुबिरागे
सिथिल सनेह गुनत मन माहीं। आए इहां कीन्ह भल नाहीं
रामहिं राय कहेउ बन जाना। कीन्ह आपु प्रियप्रेमप्रवाना
हम अब बनतें बनहिं पठाई। प्रमुदित फिरबबिबेकबड़ाई
तापस सुनि महिसुरसुनिदेषी। भये प्रेमबसबिकल बिसेषी
समउ समुझि धरिधीरजुराजा।चलेभरतपहिंसहितसमाजा
भरत आइ आगें भइ लीन्हे। अवसरसरिससुआसनदीन्हे
तात भरत कह तेरहुतिराऊ।तुम्हहिं बिदितरघुबीरसुभाऊ

दोहा॥ राम सत्यब्रत धरमरत सब कर सीलु सनेहु।
संकत सहत सकोचबस कहिअ जो आयसु देहु॥९२॥

सुनितनपुलकिनयनभरिबारी। बोले भरतु धीर धरि भारी
प्रभु प्रिय पूज्य पितासम आपू। कुलगुरुसम हितमायनबापू
कौसिकादिमुनि सचिवसमाजू।ग्यानअंबु निधि आपुनुआजू
सिसु सेवकु आयसु अनुगामी। जानिमोहिसिषदेइअस्वामी
एहि समाज थल बूझब राउर। मौन मलिन मैं बोलब बाउर
छोटे बदन कहौं बडि बाता। छमबतातलषिबामबिधाता
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। सेवाधरमुकठिन जगुजाना
स्वामिधरम स्वारथहि बिरोधू। बैरुअंध प्रेमहि न प्रबोधू

दोहा॥ राषि राम रुष धरमुब्रतु पराधीन मोहि जानि।
सब कें संमत सर्बहित करिअ पेमु पहिचानि॥९३॥

भरतबचनसुनि देषि सुभाऊ। सहितसमाज सराहत राऊ
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे। अरथु अमितअतिआषरथोरे
ज्यों मुषुमुकुरमुकुरुनिजपानी।गहिनजाइअसअदभुतबानी
भूपु भरतु मुनि साधु समाजू। गेजहंबिबुधकुमुदद्विजराजू

मुनिमुखिसोचबिकलसब लोगा। मनहुं मीनगननवजलजोगा
देव प्रथम कुलगुरगति देषी। निरषिबिदेहसनेह बिसेषी
राम भगति मय भरतु निहारे। सुरस्वारथी हहरिहियहारे
सब कोउ रामपेममय पेषा। भए अलेष सोचबस लेषा

दोहा ॥ रामु सनेह सकोचबस कह ससोच सुरराजु।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि नाहित भयेउ अकाजु ॥९४॥

सुरन्हसुमिरि सारदा सराहीं। देवि देव सरनागत पाहीं
फेरि भरतमति करिनिजमाया। पालुबिबुधकुलकरिछलछाया
बिबुधबिनय सुनि देबि सयानी। बोली सुरस्वारथजडजानी
मो सन कहहु भरतमति फेरू। लोचनसहस नसूझसुमेरू
बिधिहरिहरमायाबड़िभारी। सोउनभरतमतिसकइनिहारी
सो मति मोहि कहत करु भोरी। चंदिनिकरकि चंडकरचोरी
भरतहृदयसियरामुनिवासू। तहंकितिमिरजहंतरनिप्रकासू
असकहि सारदगइबिधिलोका। बिबुधबिकलनिसिमानहुंकोका

दोहा ॥ सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु।
रचि प्रपंच माया प्रबल भयभ्रमअरतिउचाटु ॥९५॥

करिकुचालि सोचत सुरराजू। भरतुहाथसबुकाजुअकाजू
गये जनकु रघुनाथसमीपा। सनमाने सब रबिकुलदीपा
समय समाज धरम अबिरोधा। बोले तब रघुबंसपुरोधा
जनक भरत संबादु सुनाई। भरत कहाउति कही सुहाई
तात राम जस आयसु देहू। सो सबु करइ मोर मत एहू
सुनि रघुनाथ जोरि जुगपानी। बोले सत्य सरल मृदु बानी
बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू। मोर कहब सब भांति भदेसू
राउर राय रजायसु होई। राउरिसपथ सही सिर सोई

दोहा॥ राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत ।
सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न ऊतरु देत ॥ ९६ ॥

सभा सकुच बस भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरजु भारी
कुसमउ देषि सनेहु संभारा ॥ बढ़त बिंधि जिमि घटजनिवारा
सोक कनकलोचन मति छोनी ॥ हरी बिमल गुनगन जग जोनी
भरत बिबेक बराह बिसाला ॥ अनायास उधरी तेंहि काला
करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे । राम राउ गुरु साधु निहोरे
छमब आजु अति अनुचित मोरा ॥ कहउं बदन मृदु बचन कठोरा
हियं सुमिरी सारदा सुहाई । मानस तें मुख पंकज आई
बिमल बिबेक धरम नयसाली । भरत भारती मंजु मराली

दोहा॥ निरषि बिबेक बिलोचनन्हि सिथिल सनेहं समाजु ।
करि प्रनामु बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु ॥ ९७ ॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी । पूज्य परम हित अंतरजामी
सरल सुसाहिबु सीलनिधानू । प्रनतपाल सर्बग्य सुजानू
समरथु सरनागत हितकारी । गुनगाहकु अवगुन अघहारी
स्वामि गोसांइंहि सरिस गोसांईं । मोहि समान मैं सांइ दोहाई
प्रभु पितु बचन मोह बस पेली । आयेउं इहां समाजु सकेली
जग भल पोच ऊंच अरु नीचू । अमिअ अमरपद माहुरु मीचू
रामरजाइ मेंट मन माहीं । देषा सुना कतहुं कोउ नाहीं
सो मइं सब बिधि कीन्हि ढिठाई ॥ प्रभु मानी सनेह सेवकाई

दोहा ॥ कृपां भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।
दूषन भे भूषन सरिस सुजसु चारु चहुं ओर ॥ ९८ ॥

राउरि रीति सुबानि बड़ाई । जगत बिदित निगमागम गाई
कूर कुटिल षल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी

तेउ सुनि सरन सामुहें आए । सकृतप्रनामु किहें अपनाए
देषिदोष कबहुं न उर आने । सुनि गुन साधुसमाजबषाने
को साहिब सेवकहि नेवाजी । आपु समाजसाजसबसाजी
निज करतूतिनसमुझिअ सपने। सेवकसकुचसोचुउरअपने
सो गोसांइ नहिं दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहौं पन रोपी
पसु नाचत सुक पाठ प्रबीनां । गुनगति नट पाठकआधीना
दोहा ॥ यों सुधारि सनमानि जन किये साधु सिरमोर ।
को कृपाल बिनु पालिहै बिरिदावलि बरजोर॥९९॥

सोकसनेह कि बाल सुभाएं । आयेउं लाइ रजायसु बाएं
तबहुं कृपाल हेरि निजओरा । सबहिभांतिभलमानेउंमोरा
देषेउं पाय सुमंगलमूला । जानेउंस्वामिसहजअनुकूला
बडे समाज बिलोकेउं भागू । बडी चूक साहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रहु अंगु अघाई। कीन्हि कृपानिधिसबअधिकाई
राषा मोर दुलार गोसांई । अपने सील सुभायं भलांई
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई ।स्वामिसमाज सकोचबिहाई
अबिनयबिनयजथारुचिबानी।छमिहिदेउअतिआरतिजानी

दोहा॥सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहब बडि षोरि ।
आयसु देइअ देव अब सबइ सुधारी मोरि॥२००॥

प्रभुपदपदुमपराग दोहाई । सत्य सुकृत सुपसीव सुहाई
सो करिकहौंहिये अपनेकी । रुचिजागत सोवत सपनेकी
सहज सनेह स्वामिसेवकाई । स्वारथछलफल चारि बिहाई
अग्यांसम न सुसाहिबसेवा । सो प्रसादु जन पावइ देवा
अस कहि प्रेमबिबस भएभारी। पुलक सरीरबिलोचनबारी
प्रभुपदकमल गहे अकुलाई ।समउ सनेहुन सो कहि जाई

कृपासिंधु सनमानि सुबानी । बैठाए समीप गहि पानी
भरतबिनय सुनि देषि सुभाऊ। सिथिल सनेह सभारघुराऊ

छंदु॥रघुराउ सिथिल सनेहु साधुसमाजमुनिमिथिलाधनी।
मन महुंसराहत भरत भायपभगतिकी महिमाघनी॥
भरतहिप्रसंसत बिबुध बरषत सुमनमानसमलिनसे।
तुलसीबिकलसबलोगसुनिसुकुचनिसागमनलिनसे॥

सोरठा ॥ देषि दुषारी दीन दुहुं समाज नरनारि सब ।
मघवा महामलीन मुयै मारि मंगल चहत ॥ १ ॥

कपटकुचालि सींव सुरराजू। परअकाजप्रिय आपन काजू
काकसमान पाक रिपु रीती। छलीं मलीन कतहुं नप्रतीती
प्रथम कुमत करिकपटुसंकेला।सो उचाटु सब कें सिर मेला
सुरमाया सब लोग बिमोहे। रामप्रेम अतिसय न बिछोहे
भय उचाटबस मन थिरनाहीं।छनबनरुचिछनसदनसुहाहीं
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी।सरित सिंधु संगम जनुबारी
दुचितकतहुं परितोषुनलहहीं।एकएक सन मरमु न कहहीं
लषिहियंहंसिकहकृपानिधानू।सरिस स्वान मघवानजुबानू

दोहा॥भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत बिहाइ ।
लागि देवमाया सबहि जथाजोगु जनु पाइ ॥२ ॥

कृपासिंधुलषिलोगदुषारे । निजसनेहं सुरपति छल भारे
सभा राउ गुरुमहिसुरमंत्री।भरतभगतिसबकै मति जंत्री
रामहिं चितवत चित्र लिषेसे।सकुचतबोलत बचन सिषे से
भरतप्रीतिनातिबिनयबडाई। सुनत सुषद बरनत कठिनाई
जासुबिलोकि भगतिलवलेसू। प्रेममगन मुनिगन मिथिलेसू
महिमातासुकहइकिमितुलसी।भगतिसुभायसुमतिहियहुलसी

आपुछोटिमहिमाबडिजानी।कबिकुलकानिमानिसकुचानी
कहिनसकतिगुनरुचिअधिकाई। मतिगतिबालबचनकीनाई

दोहा॥ भरतबिमल जसु बिमल बिधु सुमतिचकोरकुमारि
उदितबिमलजनहृदयनभएकटकरहीनिहारि ॥३॥

भरतसुभाउ न सुगम निगमहूं।लघुमतिचापलताकबिछमहूं
कहतसुनत सतिभाउ भरतको। सीयराम पद होइ न रतको
सुमिरतभरतहिप्रेमुरामको जेहिनसुलभुतेहिसरिसबामको
देषिदयाल दसा सबही की। राम सुजानजानि जनजी की
धरम धुरीन धीर नयनागर ।सत्य सनेह सील सुषसागर
देसुकालु लषि समउसमाजू। नीतिप्रीति पालक रघुराजू
बोले बचनबानि सरबसु से। हित परिनामसुनतससिरसुसे
तात भरत तुम्ह धरमधुरीना। लोक बेदबिद प्रेम प्रबीना

दोहा॥ करमबचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात।
गुरसमाज लघु बंधु गुन कुसमयंकिमिकहिजात॥४॥

जानहु तात तरनिकुलरीती ।सत्यसंध पितुकीरति प्रीती
समउसमाजु लाजगुरजनकी ।उदासीनहितअनहितमनकी
तुम्हहिंबिदितसबहीकरकरमू। आपनमोर परमहित धरमू
मोहिसबभांतिभरोसतुम्हारा।तदपिकहउंअवसरअनुसारा
तात तात बिनु बात हमारी। केवल गुरकुलकृपा संभारी
न तरु प्रजा परिजन परिवारू ।हमहिसहितसबुहोतषुआरू
जौं बिनु अवसर अंथव दिनेसू।जगकेहिकहहु नहोइ कलेसू
तसउतपातुतातबिधिकीन्हा।मुनिमिथिलेसराषिसबुलीन्हा

दोहा॥ राजकाज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम।
गुरप्रभाउ पालिहि सबहि भलहोइहिपरिनाम॥५॥

सहितसमाज तुम्हार हमारा । घर बन गुरप्रसाद रषवारा
मातुपितागुरस्वामिनिदेसू । सकलधरम धरनीधर सेसू
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू । तात तरनिकुलपालक होहू
साधक एक सकलसिधि देनी । कीरति सुगति भूतिमयबेनी
सो बिचार सहि संकटु भारीं । करहु प्रजा परिवारु सुषारी
बांटीबिपतिसबहिमोहिंभाईतुम्हहिअवधिभरिबडिकठिनाई
जानितुम्हहिंमृदुकहउंकठोरा ।कुसमयंतातनअनुचितमोरा
होहिं कुठायं सुबंधु सहायें।ओडिअहिंहाथअसनिहुकेघायें

दोहा ॥ सेवक कर पद नयन से मुष सो साहिबु होइ।
तुलसी प्रीतिकी रीति सुनिसुकबिसराहहिंसोइ ॥ ६॥

सभासकलसुनि रघुबर बानी । प्रेमपयोधिअमिअजनुसानी
सिथिलसमाज सनेहसमाधी। देषि दसा चुप सारद साधी
भरतहि भयेउ परम संतोषू। सनमुषस्वामिबिमुषदुषदोषू
मुषु प्रसंन मन मिटा बिषादू । भा जनु गूंगेहि गिराप्रसादू
कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी । बोले पानिपंकरुह जोरी
नाथ भयेउ सुषु साथ गये को ।लहेउं लाहु जगजनमुभयेको
अब कृपाल जस आयसुहोई । करउं सीस धरि सादर सोई
सो अवलंब देउ मोहि देई । अवधि पारु पावउं जेहि सेई

दोहा ॥ देवदेवअभिषेक हित गुरअनुसासनु पाइ ।
आनेउं सब तीरथसलिलु तेहिकहंकाहरजाइ॥७॥

एकुमनोरथु बड मन माहीं । सभय सकोच जातकहि नाहीं
कहहु तात प्रभुआयेसुपाई । बोले बानि सनेह सुहाई
चित्रकूट सुचिथलतीरथ बन।षगमृगसरिसरिनिर्झरगिरिगन
प्रभुपदअंकितअवनिबिसेषी।आयसु होइ त आवउं देषी

अवसि अत्रिआयसु सिरधरहू।तात बिगतभय कानन चरहू
मुनिप्रसाद बनु मंगल दाता। पावन परम सुहावन भ्राता
रिषिनायकु जहं आयेसु देहीं।राखेहु तीरथजलु थल तेहीं
सुनिप्रभुबचनभरतसुखुपावामुनिपदकमलमुदितसिरुनावा

दोहा॥ भरतराम संबादु सुनि सकल सुमंगलमूल ।
सुर स्वारथी सराहिकुल बरषतसुरतरु फूल॥८॥

धन्यभरत जय रामगोसांई । कहत देव हरषत बरिआई
मुनि मिथिलेस सभां सबकाहू। भरतबचनसुनिभयेउउछाहू
भरत राम गुनग्राम सनेहू।पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू
सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन।नेमु पेमु अति पावन पावन
मतिअनुसार सराहन लागे। सचिवसभासदसबअनुरागे
सुनिसुनिराम भरतसंबादू।दुहुंसमाजहियं हरषु बिषादू
राममातुदुखुसुखुसमजानी।कहिगुन राम प्रबोधी रानी
एक कहहिं रघुबीरबडाई । एक सराहत भरत भलाई

दोहा॥अत्रिकहेउ तब भरतसन सैल समीप सुकूप ।
राखिअ तीरथतोयतहं पावन अमिअ अनूप ॥ ९ ॥

भरत अत्रिअनुसासनपाई।जलभाजन सब दिये चलाई
सानुजआपुअत्रि मुनिसाधू।सहित गये जहं कूप अगाधू
पावन पाथ पुन्यथल राखा । प्रमुदितप्रेम अत्रिअस भाषा
तात अनादि सिद्ध थल एहू । लोपेउ कालबिदितनहिं केहू
तब सेवकन्ह सरस थलु देखा।कीन्ह सुजल हित कूप बिसेषा
बिधिबस भएउबिस्वउपकारू।सुगमअगमअतिधरमबिचारू
भरतकूप अबकहिहहिंलोगा। अतिपावन तीरथ जलजोगा
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी ।होइहहिं बिमलकरममनबानी

दोहा॥ कहत कूपमहिमा सकल गये जहां रघुराउ।
अत्रि सुनायेउ रघुबरहि तीरथ पुन्य प्रभाउ॥१०॥

कहतधरम इतिहास सप्रीती।भयेउभोरुनिसिसोसुषबीती
नित्य निबाहि भरत दोउभाई। राम अत्रि गुर आयसु पाई
सहित समाज साज सब सादें। चले राम बन अटन पयादें
कोमलचरनचलत बिनुपनहीं।भइमृदुभूमिसकुचिमनमनहीं
कुस कंटक कांकरी कुराई। कटु कठोर कुबस्तु दुराई
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे।बहत समीर त्रिबिधसुषलीन्हे
सुमनबरषिसुरघन करि छांही।बिटपफूलिफलितृनमुदुताहीं
मृगाबिलोकि षग बोलिसुबानी। सेवहिंसकलरामाप्रियजानी

दोहा॥ सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात।
रामप्रानप्रिय भरत कहुं येह न होइ बडि बात॥११॥

एहिबिधिभरतुफिरतबनमाहीं।नेमप्रेमुलाषिमुनि सकुचाहीं
पुन्य जलाश्रय भूमि बिभागा। षगमृगतरुतृनगिरिबन बागा
चारु बिचित्र पबित्र बिसेषी। बूझत भरतु दिव्य सब देषी
सुनि मनमुदित कहत रिषिराऊ।हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ
कतहुं निमज्जनकतहुं प्रनामा।कतहुंबिलोकतमनअभिरामा
कतहुं बैठि मुनिआयेसुपाई। सुमिरत सीयसहितदोउ भाई
देषि सुभाउ सनेहु सुसेवा। देहिंअसीस मुदित बनदेवा
फिरहिं गये दिनु पहर अढाई।प्रभुपदकमल बिलोकहिंआई

दोहा॥देषे थल तीरथ सकल भरत पांच दिन मांझ।
कहतसुनतहरिहर सुजसु गयेउ दिवसु भइसांझ॥१२॥

भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू। भरत भूमिसुर तेरहुतिराजू
भल दिन आजु जानि मनमाहीं।रामु कृपाल कहत सकुचाहीं

गुरनृपभरतसभाअवलोकी।सकुचिरामफिरिअवनिबिलोकी
सील सराहि सभा सब सोची।कहुंनरामसमस्वामिसंकोची
भरत सुजान रामरुष देषी ।उठि सप्रेम धरि धीरबिसेषी
करि दंडवत कहत कर जोरी । राषी नाथ सकलरुचि मोरी
मोहिलागिसहेउ सबहिं संतापू। बहुत भांति दुषु पावा आपू
अब गोसांइ मोहि देउ रजाई।सेवउं अवध अवधिभरिजाई

दोहा ॥ जेहि उपाय पुनि पाय जनु देषइ दीनदयाल ।
सो।सिष देइअ अवधिलगि कोसलपालकृपाल॥१३॥

पुरजनपारिजन प्रजा गोसांई । सब सुचिसरससनेहं सगाई
राउर बदि भल भवदुषदाहू । प्रभुबिनुबादि परमपद लाहू
स्वामिसुजानुजानि सबहीकी। रुचिलालसारहनिजन जीकी
प्रनतपालु पालहिं सब काहू। देउ दुहूंदिसि ओर निबाहू
असमोहिसबाबिधिभूरिभरोसो। कियेबिचारुनसोचुषरोसो
आरति मोर नाथ कर छोहू। दुहुंमिलिकीन्हढीठु हठि मोहू
येह बड दोषुदूरिकरिस्वामी।तजिसकोचसिषइअअनुगामी
भरतबिनयसुनि सबहिप्रसंसी।षीरनीर बिबरनगति हंसी

दोहा ॥ दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन ।
देसकालअवसर सरिस बोले रामु प्रबीन ॥ १४ ॥

तालतुम्हारि मोरिपरिजन की।चिंतागुरहिनृपहि घर बनकी
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू । हमहिंतुम्हहिंसपनेहुंनकलेसू
मोर तुम्हार परम पुरुषारथु ।स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु
पितुआयसु पालिहि दुहुंभाई। लोक बेद भल भूप भलाई
गुरपितुमातुस्वामिसिष पालें । चलेहु कुमगपगपरहिंनषालें
अस बिचारि सब सोच बिहाई।पालहुअवधअवधि भरिजाई

देसु कोसु परिजन परिवारू। गुरपद रजहिंलाग छरुभारू
तुम्हमुनिमातुसचिवासिषमानी।पालेहु पुहुमि प्रजारजधानी

दोहा॥ मुषिआ मुषु सो चाहिऐ षान पान कहुं एक।
पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित बिबेक॥१५॥

राजधरमसरबसु एतनोई। जिमि मन मांहमनोरथ गोई
बंधुप्रबोधु कीन्ह बहु भांती।बिनु अधार मन तोषनसांती
भरत सीलु गुरसाचिवसमाजू। सकुचसनेहाबिबस रघुराजू
प्रभु करि कृपा पावरी दीन्हीं। सादरभरतसीसधरिलीन्हीं
चरनपीठ करुनानिधान के। जनु जुग जामिक प्रजा प्रानके
संपुट भरतसनेह रतनके। आषर जुगजनुजीवजतन के
कुलकपाट करकुसलकरमके। बिमलनयन सेवा सुधरमके
भरत मुदित अवलंब लहेतें। अससुष जससियरामुरहेतें

दोहा॥मांगेउ बिदा प्रनामुकरि, राम लिए उर लाइ।
लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ॥१६॥

सोकुचालि सबकहं भइनीकी। अवधिआससमजीवनिजीकी
नतरुलषनसिय राम बियोगा।हहरिमरतसबुलोगकुरोगा
रामकृपा अवरेब सुधारी। बिबुधधारिभइगुनदगोहारी
भेंटत भुजभरिभाइ भरतसो।राम प्रेमरसु कहि न परतसो
तन मन बचन उमगअनुरागा। धीरधुरंधर धीरजु त्यागा
बारिजलोचन मोचतबारी। देषिदशा सुरसभा दुषारी
मुनिगन गुरधुरधीर जनकसे। ग्यानअनल मन कसेकनकसे
जे बिरंचि निरलेप उपाए।पदुमपत्र जिमि जगजलजाए

दोहा॥तेउ बिलोकि रघुबर भरत प्रीति अनूप अपार।
भए मगन मन तन बचन सहित बिराग बिचार॥१७॥

जहांजनकगुरगतिमतिभोरी। प्राकृत प्रीति कहतबडिषोरी
बरनत रघुबर भरत बियोगू। सुनिकठोरकबिजानिहिलोगू
सो सकोचु रसुअकथसुबानी। समउसनेहुसुमिरिसकुचानी
भेंटिभरतु रघुबर समुझाये। पुनिरिपुदवनुहरषिहियलाए
सेवक सचिव भरत रुषपाई। निज निज काजलगेसबजाई
सुनि दारुनदुषु दुहूं समाजा। लगे चलन के साजन साजा
प्रभुपदपदुम बंदि दोउ भाई। चले सीस धरि रामरजाई
मुनि तापस बनदेव निहोरी। सब सनमानि बहोरिबहोरी

दोहा॥लषनहिं भेंटि प्रनामु करि सिर धरिसिय पदधूरि।
चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि॥१८॥

सानुजरामनृपहि सिरनाई। कीन्हिबहुतबिधिबिनयबडाई
देव दयावस बडदुषु पायेउ। सहित समाज काननहिंआयेउ
पुर पगु धारिअदेइ असीसा। कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा
मुनि महिदेव साधुसनमाने। बिदा किए हरि हर समजाने
सासुसमीप गये दोउभाई। फिरे बंदि पग आसिष पाई
कौसिक बामदेव जाबाली। पुरजनपरिजनसचिवसुचाली
जथाजोगु करि बिनय प्रनामा। बिदा किये सब सानुजरामा
नारि पुरुष लघु मध्य बडेरे। सबसनमानिकृपानिधिफेरे

दोहा॥ भरतमातुपदबंदि प्रभु सुचिसनेह मिलि भेंटि।
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोचसबमेंटि॥१९॥

परिजनमातुपितहिमिलिसीता। फिरीप्रानप्रिय प्रेम पुनीता
करि प्रनामु भेंटीसब सासू। प्रीतिकहतकबिहियनहुलासू
सुनिसिषअभिमतआसिषपाई। रही सीय दुहुं प्रीति समाई
रघुपति पटु पालकीं मंगाईं। करि प्रबोधु सबमातु चढाईं

बार बार हिलि मिलि दुहुँ भाई । सम सनेह जननीं पहुचाई
साजि बाजि गजबाहन नाना । भरत भूपदल कीन्ह पयाना
हृदयं रामुसिय लषन समेता । चले जांहिं सबलोग अचेता
बसह बाजिगज पशुहियंहारें । चले जांहि परबस मन मारें

दोहा ॥ गुर गुरुतिय पद बंदि प्रभु सीता लषन समेत ।
फिरे हरष बिसमय सहित आये परनानिकेत ॥ १० ॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू । चलेउ हृदय बडा बिरह बिषादू
कोल किरात भिल्लबनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी
प्रभुसियलषन बैठिबटछांहीं । प्रियपरिजनबियोगबिलखाहीं
भरत सनेहु सुभाउ सुबानी । प्रिया अनुज सन कहत बखानी
प्रीतिप्रतीतिबचनमनकरनी । श्रीमुष राम प्रेमबस बरनी
तेहि अवसर षग मृग जल मीना । चित्रकूट चर अचर मलीना
बिबुधा बिलोकि दसा रघुबरकी । बरषि सुमन कहि गति घर घरकी
प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न षरोसो

दोहा ॥ सानुज सीयसमेत प्रभु राजत परनकुटीर ।
भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें सरीर ॥ २१ ॥

मुनि महिसुर गुर भरत भुआलू । राम बिरह सबु साजु बिहालू
प्रभुगुनग्राम गनत मनमाहीं । सब चुपचाप चले मगजाहीं
जमुना उतरि पार सबु भयऊ । सो बासरु बिनु भोजन गयऊ
उतरि देवसरि दूसर बासू । रामसषां सब कीन्ह सुपासू
सई उतरि गोमती नहाये । चौथें दिवस अवधपुर आये
जनकु रहे पुर बासर चारी । राजकाज सब साज संभारी
सौंपि सचिव गुर भरतहि राजू । तेरहुति चले साजि सबु साजू
नगर नारि नर गुरसिष मानी । बसे सुषेन राम रजधानी

दोहा ॥ रामदरस लगि लोग सब करत नेम उपवास ।
तजितजि भूषन भोग सुख जिअत अवधिकीआस२२

सचिवसुसेवक भरत प्रबोधे । निज निज काजपाइसिखओधे
पुनिसिखदीन्हि बोलिलघुभाई। सौंपी सकल मातुसेवकाई
भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रनाम बयबिनय निहोरे
ऊँच नीच कारजु भल पोचू । आयसु देब न करब सँकोचू
परिजन पुरजन प्रजा बोलाए। समाधानु करि सुबस बसाए
सानुज गे गुरगेहं बहोरी । करि दंडवत कहत कर जोरी
आयसु होइ त रहउं सनेमा। बोले मुनि तन पुलकि सपेमा
समुझब कहबकरबतुम्ह जोई । धरमसारु जग होइहि सोई

दोहा॥सुनि सिख पाइ असीस बडि गनकबोलिदिनुसाधि।
सिंघासन प्रभुपादुका बैठारे निरुपाधि ॥ २३ ॥

राममातु गुरपद सिरु नाई । प्रभुपद पीठ रजायसु पाई
नंदिगांव करि परनकुटीरा ।कीन्ह निवासु धरमधुर धीरा
जटाजूट सिर मुनिपट धारी । महि खनि कुससांथरीसंवारी
असन बसन बासन ब्रत नेमा।करत कठिनरिषिधरमसपेमा
भूषन बसन भोग सुख भूरी । मन तन बचनतजे तिन तूरी
अवधराजु सुरराजु सिहाई । दसरथधनु सुनि धनदलजाई
तेहि पुर बसत भरत बिनुरागा।चंचरीक जिमि चंपकबागा
रमाबिलास रामअनुरागी । तजतबमनजिमिजनबडभागी

दोहा ॥ रामपेमभाजन भरतु बडे न येहि करतूति ।
चातक हंस सराहिअत टेंक बिबेक बिभूति॥२४॥

देहदिनहुं दिन दूबरि होई । घटइ तेजुबलमुखछबि सोई
नित नव रामपेम पनु पीना ।बढत धरमदलुमन न मलीना

जिमिजलुनिघटतसरदप्रकासे।बिलसतबेतसबनजबिकासे
समदम संजमनियमउपासा।नषतभरतहियंबिमलअकासा
ध्रुवबिस्वासुअवधिराकासी।स्वामिसुरतिसुरबीथिबिकासी
रामपेमबिधु अचल अदोषा । सहितसमाजसोहनितचोषा
भरतरहानिसमुझनिकरतूती।भगतिबिरतिगुनबिमल बिभूती
बरनत सकलसुकबिसकुचाहीं।सेसगनेस गिरा गमु नाहीं
दोहा ॥ नित पूजत प्रभुपांवरी प्रीति न हृदय समाति ।
मागिमागि आयसु करत राजकाजबहु भांति ॥२५॥
पुलकगातहियंसिय रघुबीरू । जीह नामुजपलोचन नीरू
लषनराम सियकाननबसहीं।भरतुभवनबसितपतनुकसहीं
दोउनिसिसमुझिकहतसबुलोगू।सबबिधिभरतसराहनजोगू
सुनिब्रत नेम साधु सकुचाहीं।देषिदसा मुनिराज लजाहीं
परमपुनीत भरतआचरनू । मधुरमंजुमुदमंगलकरनू
हरन कठिन कलि कलुषकलेसू।महामोह निसि दलनदिनेसू
पापपुंजकुंजर मृगराजू । समन सकलसंतापसमाजू
जनरंजन भंजन भवभारू। रामसनेह सुधाकरसारू
छंदु ॥ सियरामप्रेमपियूष पूरन होत जनमु न भरतको ।
मुनिमनअगमजमनियमसमदमबिषमब्रतआचरतको
दुषदाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरतको।
कलिकालतुलसीसेसठन्हि हठिरामसनमुषकरतको॥
सोरठा॥भरतचरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीयरामपद पेमु अवसि होइ भवरसबिरति॥२६॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनो नाम
द्वितीयःसोपानःसमाप्तः ॥